राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 8 अंक : 98 15 जून 2005

सदस्यता शुल्क :

वार्षिक : रुपए 40/-

भारत व नेपाल में

एक प्रतिः रुपए 5/-

इस अंक में

1. बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग 2
2. ध्यानाकर्षण बिन्दू 40
3. जीवों को बीमारी क्यों होती है (शिवव्रतलाल जी) 41
4. अनमोल वचन व ज्ञान सार 42
5. सत्संग भावांश 43
6. सतगुरु कृपा 45
7. कहानी (मनुष्य जन्म) 47
8. कहानी (दुर्भाषी से बचो) 48

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-265094 (दिनोद आश्रम)

वेबसाइटः- www.radhaswamidinod.org

इ-मेलः- info@radhaswamidinod.org

भिवानी : कैसेट क्रमांक : 106

दिनांक : 4 मार्च, 1993

समय : रात्रि

जिनको चाह है राम मिलन की राम उन्हें मिल जाते हैं,
रामदास के पास राम हैं, औरों को नहीं पाते हैं।।
राम नहीं तीर्थ में रहते, राम व्रत के साथ नहीं।
रामदास के हाथ राम है, औरों के वे हाथ नहीं।।
वाद-विवाद में राम नहीं है, राम न पूजा पेखी में।
रामदास ने राम को पाया, सहज ही देखा देखी में।।
बूंद के सिंध, सिंध में बूंदें बूंद सिंध दोऊ एक हुए।
बूंद सिंध का झगड़ा मन में, उनके लिए अनेक हुए।।
राधास्वामी सतगुरु आए, भेद दिया पूरा-पूरा।
जो कोई भेद भाव को मेटे, सतगुरु का सेवक सूरा।।

गुरु तारेंगे हमजानी, तू सूरत काहे बौरानी।
दढ़ पकड़ो शब्द निशानी, तेरी काल करे नहीं हानि।।
तू हो जा शब्द दिवानी, मत सुनो और की बानी।
सब छोड़ो भरम कहानी, गुरु का मत लो पहचानी।।
चढ़ बैठो अगम ठिकानी, राधास्वामी कहत बखानी।

गुरु से लग्न कठिन है भाई, ...।।
लग्न लगे बिन काज न सरिहे। जीव प्रलय हो जाई।।
जैसे पपीहा प्यासा बूंद का, पिया-पिया रट लाई।

प्यासा प्राण तड़प दिन राती, और नीर नहीं भाई।।
जैसे मगा शब्द स्नेही, शब्द सुणन को जाई।
शब्द सुने और प्राण दान दे, तनिक नहीं डराई।।
जैसे सती चढ़े सत ऊपर, पिया की राह मन भाई।
पावक देख डरे वा नाहीं, हंसत बैठ झरा माहिं।
दो दल सन्मुख आन जुड़े हों, सूरा लेते लड़ाई।
टूक टूक हो गिरे धरण पर, खेत छोड़ न जाई।।
छोड़ों तन अपने की आशा निर्भय हो गुण गाई।।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो नहीं तो जन्म नसाई।।

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!
राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियों, सत्संगियों, माताओ और बहनों ! यह कबीर साहब की वाणी है–

गुरु से लग्न कठिन है भाई।
लग्न लगे बिन काज न सरिहै जीव प्रलय हो जाई।।

तुम रोज शब्द गाते हो–

गुरु चरणों में राखियो! गुरू चरणों में राखियों।

मेरी नजर में कोई भी आज तक चरणों में रहने वाला ही नहीं आया। आप कहोगे कि क्यों नहीं मिला? मैं क्या करूं? मेरी तो प्रारब्ध ही ऐसी है। कहते तो बहुत हो बार–बार कि चरणों में रखियो। पर सच्चाई यह है कि एक बार भी अगर कोई कटु वचन या कठोर बोल दे तो तुम उसकी बंदगी करने नहीं आते हो। मैं कितनों की मिसाल दूं? मेरे पास काफी सत्संगी आए। उन्हें यही कठोर बातें कही गई कि पगला! तू अपनी लाइन को बदल। यह शब्द ऐसा नहीं था। यह वाणी ऐसी नहीं थी। उसी वक्त ही उन्होंने शब्द गाने छोड़ दिए। किसी को मैंने कहा–ये संतमत की

लाइन ऐसी नहीं है। तो उनको धक्का लगा और वे छोड़ कर चले गए। ऐसा होता ही है। यह किसी के वश की बात नहीं है। क्योंकि सच्ची बात कड़वी लगती है। उसका रस तो बाद में ही अच्छा लगता है। मेरे अंदर भी यही ऐब था। मैं भी मान व बड़ाई में होता था और यू सोचता था कि मेरे महाराज जी न आए तो मन चाहा बोलूंगा। मुझे और कौन रोकेगा? पर मुझे यह ख्याल नहीं था कि सतगुरु दयाल तेरे पास बैठा है इसीलिए तो तू बोलता है। नहीं तो तेरी इतनी ताकत नहीं थी कि तू बोलता। जीव की इतनी शक्ति नहीं है वह अपनी मन मर्जी से कुछ करे और जिन्होंने अपनी मनमर्जी से किया उनके नाम तो मेरे से न कहलवाओ। उनके नाम अगर लेने लग गया तो आप लोगों की चौंध खुल जाएगी। वे लोग बड़े त्राहि–त्राहि करके मरे हैं। उनको कभी शांति नहीं मिली। कबीर साहब कहते हैं–

गुरु बढ़ाए सब बढ़े, बलकर बढ़ा न कोय।
बलकर हिरण्याकुश रावण बढ़े, जड़ा मूल से गए खोय।।

जो सतगुरु की दया से काम बनता है वही बनता है। अपनी मर्जी से किस–किस ने बताया? कितनों के नाम लूं? राधास्वामी मत में से फट कर उन्होंने अपने न्यारे–न्यारे पंथ चला लिए। आज उनके पंथों का नाम भी मिट गया है और उनकी शान और नेम धर्म भी खत्म हो गया। जिन भोले भक्तों ने सतगुरु की शरण में जाकर सहारा लिया, उनका नाम भी अमर हो गया और उनका जीवन भी सफल हो गया। इसीलिए संत महात्मा इशारे देकर कह तो बहुत सी बातें देते हैं कि–

गुरु तारेंगे मैं जानी तू सूरत काहे बौरानी।
गुरु से लग्न कठिन है भाई।
लग्न लगे बिन काज न सरिहै, जीव प्रलय हो जाई।।

मुझे एक बात याद आ गई। गुरु महाराज से लग्न कैसे कठिन

है? एक बार की बात है। एक वजीर शिकार खेलने गया। शिकार खेलते खेलते दूर निकल गया। घूमते–घूमते जब वह जंगल के बीच से निकला तो देखा कि एक झीमर शहतूत (लकड़ी) काट रहा था। जीव का वक्त आता है। शहतूत काटते–काटते उसका दांता नीचे गिर पड़ा। वजीर उसके पास से जा रहा था। वजीर ने उसको देख लिया। जब दांता पड़ा तो झीमर ने वजीर को नहीं देखा। उसने सोचा कि तू अकेला ही है। उसने कहा–भाई दांता मुझे नीचे उतरना पड़ेगा अगर मेरे सतगुरु की दया है तो तू ही ऊपर चला आ वापिस। कहते हैं कि वह दांता जमीन से उठकर ऊपर चला गया।

आप लोग कितने मंत्र सीखते हो? मैंने बहुत मंत्र देखे हैं, असली मंत्र को तो तुम भूल जाते हो। ये मंत्र और जंत्र तो एक नाम ही है। वही नाम जब कमा लिया जाता है तो सारे काम कर देता है। जिसने नाम को पका लिया है वह नाम चलती गाड़ी को रोक सकता है। नाम में इतनी शक्ति है। वह दांता तत्काल ही ऊपर उठकर चला गया। वजीर ने देखा कि यह तो कोई महापुरुष है। पहुंचा हुआ भी है। मैं यह बताता हूं कि गुरु से लग्न कैसे लगाई जाती है। वह दांता ऊपर आया और वजीर घोड़े से उतर गया। झीमर ऊपर से शहतूत काटता गया। नीचे वजीर इकट्ठे करता गया। जब झीमर ऊपर से नीचे उतरने लगा तो वजीर बोला–महाराज! मैं अपने हाथ की पौड़ी बना देता हूं आप के पांव नीचे। आप शांति से उतर आओ। उसने देखा तो सोचा कि आज तो तू लुट ही गया। क्योंकि यह तो आदमी ही ऐसा है कि तेरी पूजा को छीनेगा। पर वह आहिस्ता–आहिस्ता उतर आया। उतर कर उसने कहा–क्या बात है? उस वजीर ने पांव पकड़ लिये और कहा–महाराज! आप के पास जो वस्तु है मुझे दे दो। मैं गरीब हूं आपका भिखारी हूं। मुझ पर रहम करो, दया करो।

तुमने सुना भी होगा–

कभी देते शीत मीत और कभी देते सिर सांटै।
हम सौदागर आए, जग तू मत ना नाटै।।

महात्मा लोग कभी शीत–मीत देते हैं और कभी सिर के बदले। पर हम संसारी लोग शीत–मीत की कद्र नहीं करते हैं। मैं इसीलिए नाम की कद्र करता हूं।

मेरी जब छोटी उम्र थी तब इस नाम के लिए बड़े ही भारी दुख झेले थे। जगह–जगह गया और पता नहीं कितनों के चरण छूए बहुतों से बातें की। तब जाकर यह बात बनी। बड़ी बात क्या है? उस झीमर का नाम कालू कीरा था। वह नारद का गुरु था।

मेरे पास एक प्रेमी आया। उसकी बहन हमारे गांव में थी। उसने कहा–तूने गलत काम किया है। तू ब्राह्मण की बेटी है और जाट को गुरु बना लिया है। ब्राह्मण तो जगत का गुरु होता है। तूने तो बट्टा लगा दिया है। उसने कहा–भाई! मुझे तो पता नहीं पर चल कर बात तो कर ले। वह मेरे पास आ गया। उसने कहा–ब्राह्मण तो गुरु है जगत का। मैंने कहा–अगर दोहा याद है तो आगे बोलो। उसने कहा–नहीं ब्राह्मण जगत का गुरु है। मैंने कहा–आप ठीक बोलते हो। मैंने कहा दोहा ये है–

ब्राह्मण गुरु है जगत का, संतन का गुरु नाहिं।
उलझ पुलझ के मर गया, चारों वेदों माहिं।।

वह तो चारों वेदों में उलझ कर मर जाता है। वेद उस घर का भेद नहीं देते। वे तो इशारा करते हैं। क्या इशारा करते हैं? वेदों में ब्रह्म का वर्णन है। पार ब्रह्म का वर्णन नहीं है। जब पार ब्रह्म की बातें चलती हैं उस वक्त वेद कहता है कि नेति, नेति (न + इति)। मतलब आगे चलो। सो जो इनसे बंध जाते हैं, वे दुखी होते हैं। इनसे बंधना नहीं है। अपना काम करना है। मैंने कहा कि भले आदमी! यह तो सोचो कि हम जाति–पाति को मानते ही नहीं है।

हम तो कर्म को मानते हैं जो अच्छे कर्म करता है वही देवता है और जो बुरे कर्म करता है वह राक्षस हैं आप तो जाति में फंस गये हो। जाति वहां नहीं है। न जाते हैं, तब जाति हैं न आते है तब जाति है। ईश्वर कत या मालिक कत जातियां तो हमारी दो ही हैं। एक स्त्री की है और दूसरी पुरुष की है। मानस कत जातियां तो हजारों बना रखी है। कौन सी का सहारा लोगे? हम तो ईश्वरकत जाति को ही मानते हैं जो मालिक ने बनाई हैं। अब सोचो किस का नाम लोगे? कबीर साहब के पास सर्वजीत पंडित गए थे। कबीर योग का छठा, सातवां भाग देखो। सर्वजीत गए तो उन्होंने क्या किया? बातें तो मैं बीच में ही छोड़ रहा हूं। आपने सर्वजीत की कहानी भी सुनी होगी। आप नारद को किस का पुत्र मानते हो? उसने कहा–नारद तो ब्रह्मा का पुत्र था। वह तो तुम्हारा अंशी था। उसने कहा–हां। मैंने पूछा–नारद का गुरु कौन था? उसने कहा–उसका बाप था। मैंने कहा–ये गलत बातें हैं। गलत नहीं कहा करते। मैंने उसको बताया कि उसके बाप ने तो जहां वह बैठता था उस जमीन को ही खोदना शुरु कर दिया था। जब नारद वहां से उठकर चलता था तो सवा हाथ धरती खोद कर बाहर फेंकता था और दूसरी मिट्टी डाल कर लीप देता था। एक दिन नारद की मां सावित्री ने कहा–महाराज! यह क्या तमाशा है? आप का ही पुत्र बैठता है। जब उठकर चला जाता है तो मिट्टी डाल कर लीपते हो। ब्रह्मा ने कहा–तू क्या करेगी, पूछ कर? सावित्री ने कहा–नहीं, बताओ। ब्रह्मा ने कहा–यह बिना गुरु का है। यह अपने मन में अहंकारी है कि मैं ब्रह्म ज्ञानी हूं। मैं गर्भज्ञानी हूं। इसमें बेहद अहंकार है। यह तिर नहीं सकता है कभी भी।

सतगुरु शरणा लीजे भाई, ता ते जीव नर्क नहीं जाई।।

नारद की मां ने कहा–यदि सतगुरु की शरण में लाना है तो इसको सतगुरु बता दो। ब्रह्मा ने कहा–क्या बताऊं? यह तो मान

ही नहीं सकता है क्योंकि चातर की बेटी फूहड़ होती है और बड़े विद्वान के बेटे फेल होते हैं। वे केवल बेटे का भाव रखते हैं। बेटा बाप का भाव रखता है। सो यह मेरा बेटा है। मैं इसको समझा नहीं सकता। उसने कहा–फिर भी इसको बताओ। ब्रह्मा ने कहा–बता दूंगा। अब मां तो रूक नहीं सकती है। मां तो मां ही होती है। जिनको मां की सेवा मिल जाती है उससे भागी दुनिया में कोई भी नहीं होता है। इस संसार में जब मां बनी थी उस वक्त दूसरी कोई चीज नहीं बनी। जो अपनी मां को धक्का मारते हैं, जो अपनी मां को ठुकरा देते हैं, जो अपनी मां की चोटी उखाड़ते हैं वे बड़े पापी हैं। वे खानदानी नहीं हैं।

जो मां हो जारणी तो पुत्र को नहीं विचारणी।

उसकी तो मां ही है, उसने खून पिला कर पाला है। सो नारद की मां से रहा नहीं गया। जब नारद दूसरे दिन ब्रह्मा के पास से उठकर चला तो उसकी मां ने कहा–बेटा ठहर जा। नारद ने कहा–माता जी! क्या बात है? उसने कहा–तू देख कि तेरा बाप क्या कर रहा है? मैंने यह बात उसको बताई थी जो ये कहने आया था कि जाट गुरु कैसे बन गया? नारद ने अपने पिता जी से पूछा–पिता जी! यह क्या करते हो? ब्रह्मा ने कहा–बेटा! तू बिना गुरु का है। तेरे अंदर अहंकार है। इसीलिए यह जमीन दागिन हो गई है और मिट्टी खोद कर दूसरी मिट्टी डाल कर चौका लगाता हूं। नारद ने कहा–महाराज! आप मुझे गुरु बता दो। ब्रह्मा ने पूछा–क्या तू मेरी बात पर विश्वास कर लेगा? उसने कहा–हां। ब्रह्मा ने कहा–अगर तू गुरु पूछता है तो सुन। तुझे सुबह–सुबह जो भी दरवाजे पर मिल जाए, उसे ही गुरु बना लेना। ब्रह्मा को तो सब बातों का पता ही था। ब्रह्मा, विष्णु, महेश स्वर्ग भी देते हैं और बैकुण्ठ भी देते हैं। पर इनकी मुक्ति अनादि नहीं है मियादी है। पर ये सब काम कर सकते हैं। ये खुद भी चक्कर काटते रहते हैं।

इन्होंने बड़ा भरी तप किया है और जो चाहे अपने राज में कर सकते हैं। उसने नारद को सारी बातें बता दी। अब नारद जी सवेरे ही उठकर दरवाजे पर गया। उसने देखा कि एक झीमर मछली पकड़े आ रहा है। मछली उसने कंधे पर डाल रखी थी। उसने सोचा कि पिता जी ने तो यही कहा था कि जो सवेरे–सवेरे दरवाजे पर मिले उसे गुरु बना लेना। वह तो पापी है। मैं तो इसको गुरु नहीं बनाऊंगा। अब नारद उलटा ही आ गया। ब्रह्मा जी ने पूछा–बेटा! क्या तूने गुरु बना लिया? नारद ने कहा–नहीं जी, कल बनाऊंगा। उसने सारी घटना तो नहीं बताई। दूसरे दिन दूसरे दरवाजे पर चला गया तो उस दरवाजे पर भी वही झीमर मिल गया। उस दिन फिर घणा करके गुरु बनाने से इंकार कर दिया। फिर ब्रह्मा ने पूछा तो उसने फिर वही बात दोहराई कि कल बनाऊंगा। ब्रह्मा ने कहा–देर हो रही है तू देख लेना। मौका जा रहा है। तीसरे दिन सुबह ही तीसरे दरवाजे पर गया तो वहां भी वही मिला। उस शहर के चार दरवाजे थे। फिर भी टाल–मटोल कर गया और बता दिया कि गुरु नहीं बनाया है। जब नारद चौथे दिन चौथे दरवाजे पर गया तो वही झीमर मिला कालू कीरा। यह तो सब मालिक का खेल था। उसने देखा और सोचा कि यही मिलता है तो इसी को बना ले। नारद उसके पैरों में पड़ गया और बोला–महाराज! मुझे नाम दे दो। उसने कहा–मैं तो झीमर हूं। मछली पकड़ता हूं। मेरा पेशा यही है। मुझे नाम का कोई पता नहीं है। नारद ने कहा–नहीं महाराज जी! मेरा विश्वास है। मुझे कुछ बताओ। झीमर ने कहा–बैठ जाओ। अब उसने उसको नाम दे दिया। नारद नाम लेकर चला गया। इसी कारण से मनु जी महाराज कहते हैं–

गुरु की निंदा सुनिए न काना।
पाप लगे गौ घात समाना।।

जो स्त्री अपने पति की बुराई सुनती है, उसे पतिव्रता कौन कहेगा? जो गुरुमुख अपने गुरु की बुराई सुनता है, उसको गुरुमुख कौन कहेगा? वह तो नालायक और काफिर है। बस मैं तो सिर्फ इसी बात से जीता था। सतगुरु की ही दया हुई थी। मैं भजन क्या करता था।

सो नारद ब्रह्मा जी के पास आया। ब्रह्मा ने पूछा–बेटा! गुरु बना लिया? नारद ने कहा–हां जी, गुरु तो बना लिया पर..... । पर का क्या मतलब था? वह कहने ही वाला था कि मैंने सतगुरु तो बना लिया पर मेरा सतगुरु है तो पापी। पर वह अगली बात नहीं कह सका। पर कह कर रूक गया। ब्रह्मा ने कहा–बेटा! चौरासी तुझे भोगनी पड़ेगी। क्योंकि तूने सतगुरु के साथ पर लगा दिया। जाओ, चौरासी भोगोगे। नारद ने पूछा–अब क्या करूं? ब्रह्मा ने कहा–बेटा गुरु चाहे तो बचा दे और तो बचाने वाला कोई भी नहीं है। सो उस मालिक को भी सतगुरु की इज्जत रखनी पड़ती है। नहीं तो उसके नाम को बट्टा लगता है। पर मैं सतगुरु की बातें बताता हूं। बार–बार कहता हूं कि गुरु कामी है तो वह एक कौड़ी का भी नहीं। क्रोधी है तो एक कौड़ी का नहीं। लोभ, मोह में फंसा बैठा है तो भी एक कौड़ी का नहीं है। अहंकारी है तो भी एक कौड़ी का नहीं है। इन से बचा हो और अपने स्वार्थ के लिए काम न करता हो। कई–कई ऐसा खेल खिला देते हैं।

एक निजामुद्दीन और खसरूद्दीन की ऐसी ही बात थी। सतगुरु जीवों को खेल दिखाते हैं, समझाते हैं चक्कर से बचाने के लिए फिर भी सतगुरु घातक क्रोध नहीं करता है। दातक क्रोध ही करता है।

नारद जी ने जब ये बातें सुनी तो मन में सोचा कि अब क्या करूं? वह अपने गुरु के पास आया। उस झीमर के पांव पकड़ लिये और कहा–महाराज! मैं तो डूब गया। मेरे ऊपर दया करो।

उसने पूछा–क्या बात हुई? नारद ने कहा–मैंने आपके साथ पर लगा दिया। ब्रह्मा ने कह दिया कि तुझे चौरासी भोगनी पड़ेगी। अब आप मुझ पर दया कर दो और बचा लो। मैं तो डूब ही गया हूं। आप फिर भी महात्मा हो। दया कर सकते हो। कालू कीरा ने कहा–तू घबरा मत। ऐसा करना। तेरे पिता (ब्रह्मा) सष्टि रचना जानते हैं उनसे कहना कि पिता जी! लख चौरासी जीव योनियां आप जमीन पर खींच कर उसे दिखा दो। ब्रह्मा जी जमीन पर मिट्टी में लख चौरासी का नक्शा बना देंगे। जब वे नक्शा बना दें तो तू उससे पूछना कि क्या यही लख चौरासी भोगनी होंगी। वे कह देंगे कि हां। उस वक्त तुम उस नक्शे पर बच्चों की तरह लोट जाना। उस सारे चित्र को मिटा देना। तुम्हारा काम बन जाएगा। इसे कहते हैं कि सतगुरु सूली की सूल बना देता है। नारद ने लख चौरासी भोगनी थी पर उसने एक ही मिनट में उसको काट दिया। नारद ने कहा–पिता जी चौरासी तो मुझे भोगनी ही पड़ेगी। आप उसका चित्र तो खींचकर दिखा दो। ब्रह्मा जी ने जमीन पर थोड़ी ही देर में चित्र बना कर दिखा दिया। नारद ने अपना कमीज निकाल कर उस पर लौट मार दी और कह दिया कि यह लो चौरासी तो मैंने भोग ली है। ब्रह्मा जी ने कहा–यह रास्ता तुम्हें किस ने बताया? नारद ने कहा–यह सब मेरे गुरु ने ही बताया। ब्रह्मा ने कहा–तू कहता था कि मेरा गुरु तो पापी है। ऐसी बातें कभी भी नहीं कहना। कबीर साहब का शब्द था। वे क्या कहते हैं–

गुरु से लग्न कठिन है भाई।

सो सतगुरु खुद ही अपने शिष्य को तार सकता है। शिष्य में इतनी ताकत नहीं है कि वह चौकस होकर उसे पकड़ ले। वह तो पता नहीं कितनी गलतियां करता रहता है। जब मैंने ये बातें उसके सामने कही और फिर उससे पूछा–बोल! उसका गुरु कौन था? नारद ब्रह्मा का पुत्र था और कालू कीरा झीमर उसका गुरु था।

सो सतगुरु की शरण में आकर अहंकार टूट जाता है। सतगुरु अहंकार को छोड़ता ही नहीं है। जब तक अहंकार रहता है तब तक गुरु से लग्न नहीं लगेगी। वह अहंकार लग्न लगने ही नहीं देता है।

कई बड़े–बड़े अफसर ऐसे होते हैं कि वे अहंकार में आकर झुकना बंद कर देते हैं। यही बातें मैं आपको बताना चाहता था। कहते तो सब हैं चरणों में राखियो। पर चरणों में रहना बड़ा मुश्किल है। उस वजीर ने झीमर की लकड़ियों की गठरी को बंधवाया और उसको कहा कि लो उठवा दो। वजीर ने कहा–महाराज! मेरे सिर पर रखो। उसके गुरु ने कहा–भाई! तू तो वजीर है। वजीर ने कहा–नहीं, आपके सामने मैं वजीर नहीं हूं। आपका तो दास और सेवक हूं। मैं वजीर नहीं हूं। मेरे सिर पर रख दो। अब लकड़ियों का बोझ सिर पर रखकर गांव में आ गया। झीमर ने कहा–भाई! अब मुझे दे दे। तू अपनी कचहरी में चला जा। मेरा घर तो गांव के इस तरफ है। अब मैं ले जाऊंगा। उसने लकड़ी उसके सिर पर रख दी और झीमर अपने घर पर आ गया।

कई–कई तो ऐसे जीव आते हैं कि उन्हें सात जन्म तक गर्म तवों पर तपना पड़ता है। पर आप प्रश्न भी कर सकते हो कि जो आप नाम देते हो तो वे नहीं लेते हैं। वे नाम किस–किस तरह देते हैं? वह नाम तुम करोड़ों को दे दो। वह नाम तो दो मूली का नाम है। संत तो करोड़ों को नाम देते हैं कमाया हुआ और संत सतगुरु जब उनकी प्रारब्ध को काटते हैं तो उनको अठारह मंजिल समझाते हैं और उनका काल के हाथ से पर्चा छीन कर दयाल के हाथ में दे देते हैं कि यह काल देश है और यह दयाल देश है। फिर धुनियां भी बता देते हैं। अगर ज्यादा ही मूर्ख है तो उसके कर्म कट जाते हैं और समझदार तो एक ही बार में। जैसे कई महात्मा लोग रोज तिलक निकालते हैं। पर हमारे सत्संगी से पूछता है तो वे बता देते हैं कि नहीं, हमारे यहां तो तिलक एक ही बार निकालते हैं।

वह एक बार का तिलक कौन सा है? जब संत सतगुरु दीक्षा देते हैं तो वे एक तिलक ही निकालते हैं। वे भेद बता देते हैं वह नाम का और असली तिलक भी यही है। यह एक ही बार निकलता है। बार–बार नहीं है।

पर वह कालू झीमर अपनी खाट पर दुखी होकर गिर पड़ा। कहते हैं कि संत महात्माओं के आगे तो सेवक रहते हैं। गहस्थियों की तो स्त्री ही वजीर का काम करती है। जो स्त्री अपने घर में पति को खुश नहीं कर सकती है वह बेचारी क्या करेगी? वह कहीं कुछ भी नहीं कर सकती। सो गुरुमुख होकर भी अपने सतगुरु को खुश नहीं कर सकता है वह क्या करेगा? मैं यही बात याद किया करता था। मेरा सतगुरु उदास दिखता तो मैं यही कहता था कि बात क्या है? मेरा जी घबराता है। आप सच्ची बात बताओ। उनकी परेशानी ऐसी ही हुआ करती थी। मैं कहता था कि कोई बात नहीं। मैं आपका बेटा हूं। परेशानी मत समझो। यह ठीक हो जाएगी। सो जब वह दुखी होकर अपनी खाट पर लोट गया तो उसकी पत्नी आई और पूछने लगी–क्या बात है, आज इतने उदास क्यों हो? गट्ठर जमीन पर डाल कर खाट पर लेट गए। उसने कहा–क्या पूछेगी? आज तो मैं लुट ही गया हूं। मेरे यहां डाका पड़ गया है। ऐ सत्संगियों! संत सतगुरु जब नाम देते हैं तो आपने सुना होगा जब रामकष्ण परमहंस के पास विवेकानन्द जी गए उनको जब उन्होंने रास्ता बताया, भेद दिया तो रामकष्ण परमहंस रो पड़े। उनसे पूछा–क्यो रोए? उन्होंने भी यही कहा कि मेरी पूंजी लुट गई है। मैंने आज उसको रास्ता बताकर अपनी शक्ति दी है, इससे मुझे घाटा पड़ गया है। अरे! संत तो पता नहीं क्या–क्या देते हैं? वे सतलोक से नीचे से जहां से शुरुआत होती है, पथ्वी तत्व में और आखरी मंजिल तक उस तत्व तक जाते हैं जो कि सारी दुनिया की जान है। समझाते हुए चलते हैं और जिस मंजिल

पर जिसकी रूह टिकी हुई है उसके कर्म वहीं इकट्ठे हो जाते हैं तो संत 15 मंजिलों का भेद इसलिए बताते हैं कि किसी की सुरत किसी मंजिल पर और किसी की किसी मंजिल पर टिकी होती है। उनके कर्म उसी स्थान पर टिके होते हैं। इसीलिए संत सतगुरु उन मंजिलों को तय करते हुए सब के कर्म दग्ध करते चलते हैं। इसी कारण से संत सतगुरु की महिमा बड़ी है। वे उनका कर्जा चुकाते हुए चलते हैं। अब कोई एक मंजिल का भेद देता है। वह क्या कर्जा चुकाएगा? भेद तो दे दिया सोहम् का और उसका कर्जा रह गया किलिरिया पर तो बताइए। उसका पता देता तो ही किलिरिया का कर्जा चूकता। उसका कर्जा कैसे चूकेगा? उसका कर्जा तो रह गया औंकार पर और उसको भेद दे दिया हिरियंग का तो फिर उसका कर्जा कैसे चुकाएगा? मेरी बात को समझो। मैं पुस्तकों की बातें नहीं कहता हूं। वह उसका कर्जा कैसे चुकाएगा? अब भेद तो दे दिया सतलोक का। सुरत का कर्जा है भंवर गुफा का। तो कर्ज तो वहां रह गया। इसलिए संत सतगुरु 15 मंजिलों का कर्जा चुकाते हुए उनके सब कर्म काटते हुए इन्हें राधास्वामी धाम में ले जाते हैं। सभी तरह के जीव उनके पास आते हैं। तब वे वहां ले जाकर उद्धार कर देते हैं। सतगुरु उसके कर्मों को दग्ध कर देता है जितने भी खोटे कर्म किए होते हैं। इसीलिए तो कहते हैं कि सतगुरु का अपनाया हुआ जीव नर्क में नहीं जाएगा। मैंने सतगुरु की बातें कही हैं। कई सतलोक से आगे नहीं बताते। तो कई सतलोक से नीचे की धुनियों का वर्णन नहीं करते। कोई और भी नीचे का वर्णन नहीं करते हैं। फिर उन जीवों का उद्धार कैसे होगा? सो उनके जीव बेचारे भटकते रह जाते हैं और काम पूरा नहीं होता है।

पर मैं आप लोगों को बता रहा था कि गुरु से लग्न कठिन है भाई। वह कठिन लग्न की बात यही थी कि जब कालू झीमर

चारपाई पर गिर पड़ा था तो उसकी पत्नी ने पूछा–आपके साथ क्या हुआ? कैसा डाका पड़ गया? उसने कहा–मैंने आज एक वजीर को नाम दे दिया। इसीलिए। उसको नाम तो दे दिया पर उसे नाम की कद्र का क्या पता है? नाम की कद्र तो पारखी जानता है। जो शब्द विवेकी हो। उसने कहा कि घबराओ मत, उठो नहाओ और खाना खाओ। यह तो मामूली सी बात है। मैं बता दूंगी। अगर आप का बीज बंजर जमीन पर गिर गया तो व्यर्थ चला गया और अगर अच्छी भूमि पर गिरा है तो बड़ी अच्छी उपज निसरेगी और आपका नाम ही रोशन कर देगा। घबराओ मत मैं आपको बता दूंगी। ऐसा ही होता है। उसने स्नान किया और रोटी खाई। सुबह ही उसने कहा–अब बताओ? उसकी पत्नी ने कहा–आप एक हांडी उठा लो। उसने अपने हाथ में हांडी ले ली। वही फटे पुराने कपड़े पहन लिए। उसकी पत्नी ने कहा–जाओ कचहरी के आगे से निकल जाना। जब आपका चेला बादशाह के साथ कचहरी में बैठा हो तो आप उस कचहरी के आगे से निकल जाना। अगर वह कोई बात पूछे तो बता देना कि मैं भिक्षा मांग करके लाया करता हूं। 5–7 घरों में जाऊंगा। आगे जैसी भी बीते मुझे बता देना। उसने कहा–ठीक है।

झीमर उसके कहे अनुसार हांडी लेकर कचहरी के आगे से निकला। उसको वजीर ने देखा और कहा–यह तो मेरा सतगुरु आया है। कचहरी लगी हुई थी। वे बातें कर रहे थे। उसने न तो किसी से मुजरा किया और न बादशाह से ही पूछा। एकदम खड़ा होकर उसके चरणों में गिर कर पूछा–महाराज जी! क्या बात है? जैसे आपने कहा–

गुरु से लग्न कठिन है भाई।

जब तक मान बड़ाई रहती है तब तक गुरु से लग्न नहीं होती और तब तक काम, क्रोध रहता है। जब तक हम लालची, स्वार्थी

हैं तब तक गुरु से लग्न नहीं होती है। मैं कितनी बातें बताऊं? घमण्ड टूट जाता है। वह वजीर बाहर आकर पैरों में गिर पड़ा। कालू ने कहा–क्या बात है? वजीर ने कहा–महाराज! मैं तो बंदगी करने आया हूं। आप कहां जा रहे हो? कालू ने कहा–मैं तो इस हंडिया में पांच–चार घरों से रोटी मांग कर लाया करता हूं। वजीर ने कहा–ये हांडी मुझे दे दो। मैं मांग कर लाऊंगा। कालू ने कहा–नहीं तू वजीर है। उसने कहा–मैं आपके आगे वजीर नहीं हूं। आपका बेटा हूं। उसने कहा–तो इसे ले जा। उसने वजीर को हांडी दे दी। वह हांडी लेकर पांच–चार घरों में फिरा। इतनी देर में कालू ने कहा–बस, हो गया काम मुझे दे दे। वह तो एक परीक्षा थी। वह हांडी लेकर वापिस आया। उसकी पत्नी ने पूछा–क्या बात हुई? उसने सारी घटना बताई। उसकी पत्नी ने कहा–आपका काम तो बन गया है। अब आपका नाम रोशन हो गया है। आपका बीज उपजाऊ जमीन में बोया गया है। आप घबराओ मत। कालू कीरा तो अपने घर में काम करने लग गया और वजीर जब वापिस गया तो बादशाह ने उसे कहा–तू मेरी नौकरी नहीं कर सकता। यहां से चला जा। आज से तेरा नाम कट गया है। अब यह नौकरी कोई और ही करेगा। तू मेरे से इजाजत लिए बगैर ही एक भिखारी के चरणों में गिर पड़ा। वजीर ने कहा–चुप हो जाओ। आप फिर उनको भिखारी नहीं कह दोगे। भिखारी किसे कहते हैं? वह भिखारी नहीं है। वह तो शहनशाहों का शहनशाह है। वह तो कुल मालिक है। उसको भिखारी कौन कहता है। अब मुझे नौकरी की जरूरत नहीं है। मैं अब बड़े बादशाह का नौकर हूं। ये बातें कहकर वजीर ने इस्तीफा दे दिया और गंगा के किनारे पर जा बैठा। गंगा के किनारे बैठकर वह मालिक की बंदगी में लग गया।

गुरु से लग्न कठिन है भाई।

मैं एक ही प्रमाण देकर बता रहा हूं। ऐसे प्रमाण मैं हजारों दे

सकता हूं। क्योंकि मैंने महात्माओं का संग किया है और मेरे गुरु महाराज के चरण छूए हैं। उनकी इज्जत और बंदगी की है।

राजा ने दूसरा कोई वजीर बना लिया। वह धोबी था। पहले वजीर को तो ज्यादा नौकरी देनी पड़ती थी। इसकी नौकरी भी थोड़ी ही थी। वह धोबी वजीर बन गया। वह कपड़े धोया करता था। उसने काम करना शुरू कर दिया। उसी वक्त दूसरे राजा को पता चल गया कि जो बहुत बढ़िया वजीर था वह तो हटा दिया है और राजा ने एक धोबी को वजीर बना रखा है। वह पढ़ा लिखा भी नहीं था। कपड़े धोया करता था। उसने सलाह बनाई कि अब इस राज्य का घेराव करके कब्जा करना चाहिए। यह सोचकर उस राजा ने इस राजा के राज्य पर चढ़ाई कर दी और इसके राज्य को चारों तरफ से घेर लिया। तब किसी ने आकर राजा को बताया कि राज्य को शत्रुओं ने घेर लिया है। राजा ने कहा–वजीर को कहो कि बन्दोबस्त करे। अब धोबी वजीर को बुलाया गया। राजा ने उसे आदेश दिया कि शत्रु ने राज्य को घेर लिया है। बन्दोबस्त करो। धोबी ने कहा–बन्दोबस्त यही है कि भाग चलो। मैं पहले दस घरों के कपड़े धोता था अब बीस घरों के कपड़े धोकर आपका गुजारा तो मैं करवा ही दूंगा। राजा ने कहा–अरे मूर्ख! तूने तो काम बिगाड़ दिया है। मैंने तो समझा था कि तू वजीर है। धोबी वजीर ने कहा–क्या मैंने गलत कहा है? मेरा अपना काम तो मैं करता रहूंगा। यही मेरा काम है। आप भाग चलो। राजा ने कहा–नहीं, राजा ने किसी से बातचीत की और गंगा के किनारे पर उस वजीर के पास किसी प्रकार हेराफेरी करके जा पहुंचा। अब वह कालूकीरा का शिष्य बन गया था। उसके जाकर उसने पांव पकड़ लिए और उससे कहा–आप खड़े हो जाओ। राज का नाश हो चुका है। सब कुछ खत्म है। आप मेरी गलती को माफ करो। वजीर ने पूछा–क्या हुआ? उसने सारी

कहानी बता दी। वजीर ने कहा–यह मेरे बस की बात नहीं है। अब तो वह झीमर भिखारी ही जो कहेगा वही बात बनेगी। अब मैं उसका हूं, तेरा नहीं हूं।

अगर कोई गुरुमुख हो तो सतगुरु की इज्जत करवा देता है सतगुरु सतगुरु ही होता है। पर कोई गुरुमुख हो तो वह भी चाहे सो कर सकता है। अब राजा ने उस भिखारी के पांव पकड़ लिए। या तो वह घणा करता था, पर उस झीमर से कहा–मुझ पर दया कर और अपने शिष्य वजीर को कहो कि उस राज्य को संभाल ले नहीं तो खलबली हो गई है। दूसरे राजा का कब्जा होने वाला है। राजा दुखी है तो सारी प्रजा दुखी है। अब झीमर उसके पास गया। कालू झीमर ने उस वजीर को कहा–खड़ा हो वजीर! काम कर। जब राज्य में दुख हो गया तो भक्ति कैसे करेंगे? पहला काम तो अपना राज्य की मदद करना ही है। इसकी मदद करेंगे तो भक्ति कर सकेंगे। अब वजीर खड़ा हुआ और दूसरे राज्य की सेना को बाहर से घेर लिया। अब वह राजा घबरा गया। उसने कहा–मैंने तो यही सुना था कि वजीर दूसरा है। यह तो वही वजीर है। हमें ही घेर लिया है। पर मैंने यह बात लंबी चौड़ी कह दी। इसीलिए कि यह कहने के लायक थी। असली बात तो यही है–

गुरु से लग्न कठिन है भाई।

जो गुरु से लग्न लगा लेता है उसे इससे बड़ा और कोई काम नहीं है।

गुरु से लग्न कठिन है भाई।
लग्न लगे बिन काज न सरिहै, जीव प्रलय हो जाई।।

जिसने अपने सतगुरु से लग्न नहीं लगाई वह जीव प्रलय में चला जाता है। सतगुरु से लग्न लगती है तो गुरु के गुण भी आ जाते हैं। मेरे पास ये रहते हैं। ये क्या सोचते हैं? इनके दिल में तो ये भी आती होगी कि जैसा गुरु है वैसा हमें पता है। जो मेरे पास

नहीं रहता है और उसका मिलना भी थोड़ी देर का ही होता है वह तो यही सोचता होगा कि हमारा सतगुरु खुदा है। इसीलिए तो कहा है–

घर का जोगी जोगणा, बाहर का जोगी सिद्ध।

और भी कहा जाता है–

गांव जंवाई, बगड़ गुरु, और गलियारे का देव।
इन तीनों का आदर नहीं, कहते हैं सहदेव।।

कोई सहदेव जी हुए हैं, पता नहीं है। सहदेव तो पांडवों में भी था। पर यह बात बताऊं कि इनका आदर नहीं होता है। गांव में अगर जंवाई रहता है तो उसकी कोई कद्र नहीं करता है। सभी गाली देकर बोलेंगे। फिर जो अपने मोहल्ले में ही गुरु है तो उसकी भी कद्र नहीं होती है। क्या आपने सुना नहीं?

तुलसी बहुरि न आइए जन्म भूमि के गांव।
गुण अवगुण देखें नहीं, लेवें पिछला नाम।।

तुलसीदास की जगह तुलसिया कहते हैं। इसी तरह से जो मोहल्ले का ही गुरु हो उसकी भी कोई कद्र नहीं होती। क्योंकि पास में रहने वाले तो नुक्स ही ढूंढते रहते हैं। गुणों को नहीं देखते हैं। नुक्स देखते–देखते ही टाइम गुजर जाता है। जैसे गंगा के पास रहने वाले गंगा में शौच निवति के बाद हाथ धोते हैं। हरिद्वार में जाकर देखो। जो बाहर से आते हैं वे उस गंगा माई पर फूल चढ़ाते हैं और दीया जलाते हैं। मंत्र बोलते हैं, मत्थे से लगाते हैं और फिर बोलते हैं–

गंगा बड़ी गोदावरी, तीर्थ बड़ा प्रयाग।
धारा बड़ी समुद्र की, पाप कटें हरिद्वार।।

और फिर गोता लगाते हैं। वहां रहने वाले अपने घरों में नहाते हैं और शौच के हाथ गंगा में धोते हैं। इसी तरह से सतगुरु के पास रहने वालों में भी ऐसी आदत पड़ जाती है। वे नुक्स ढूंढना शुरू

कर देते हैं। नुक्स ढूंढने से गिरावट आ जाती है। फिर महात्मा भी कहते हैं–परे का गुरु फूल। मैं अपने महाराज जी से सुनता था कि महाराज चरण सिंह जी एक मील से दर्शन दिया करते थे। तुम गुरुओं की कितनी इज्जत करते हो। मैं तो सब के सिर पर हाथ रखता हूं। सब से बातें करता हूं। प्यार करता हूं। बड़ा भारी, इसीलिए–**परे का गुरु फूल।**

जो दूर से दर्शन देता है वह गुरु फूल के समान है। एक सत्संगी बैठा हुआ था। वहां सेवा ले रहे थे। वह अपने आपको तो बहुत बड़ा भक्त कहता है पर वह सेवादारों के साथ उलझ बैठा। उसने बक्से के ऊपर से मेरी तरफ सिर झुकाने की कोशिश की। सेवादारों ने कहा–आप क्या करते हो? वे कहने लगे, जाओ, यहां पर टाइम नहीं है। अगर इस तरह से दर्शन करने हैं तो दिनोद चले जाया करो। सब से बातें करते हैं। जैसे तू यहां करता है, अगर सब इसी तरह करेंगे तो काम का टाइम ही निकल जाएगा। ये बातें हुई। पर उसने बड़ा बबाल खड़ा कर दिया। अगर मैं नाम लूंगा तो वो कभी भी नहीं आएगा। पर अगर वह सच्चा है तो समझ जाएगा। फिर कभी ऐसी गलती भी नहीं करेगा। तुम सत्संगी सेवादार को सतगुरु का रूप समझोगे तो कभी भी धोखा नहीं खाओगे। तुम्हें उनको सतगुरु का रूप ही समझना चाहिए। क्योंकि जब पुलिस और फौज का ही हुकम नहीं मानोगे तो फिर तुम राज द्रोही बन जाओगे। पुलिस को हुकम कहां से मिलता है? उसका हुकम राज का ही तो होता है। फौज में भी राजा का हुकम होता है। तो तुम सोचो कि वह तो राज का कानून तोड़ता है। इसीलिए जितने भी सेवादार हैं उनमें गुरु का ही हुकम होता है। वे गुरु के हुकम में हैं। फिर तुम उनके साथ लठम लट्ठा होते हो तो तुम गुरु द्रोही हो, तुम गुरुमुख नहीं हो। तुम तो गुरु का कानून तोड़ते हो। तुम उनसे लड़ते हो, जो गुरु का हुकम देते हैं। अगर समझदार हो तो समझ

जाओगे और अगर बेवकूफ हो तो तुम्हारी मर्जी। तुम कुछ भी करो। सो सेवादार की कद्र करनी चाहिए। ये सोचना चाहिए कि इसको वहीं से हुकम मिला हुआ है। वे अपनी मर्जी से तो तुम्हारे आगे नहीं अड़ते। वे हुकम में हैं। तो मैं आपको बता रहा था–

गांव जवांई बगड़ गुरु और गलियारे का देव।
इन तीनों का आदर नहीं, कहते हैं सहदेव।।

दूसरा दोहा है–

परे का गुरु फूल।

दूर का गुरु फूल के समान होता है। लोग उसकी बहुत कद्र करते हैं। दूर से दर्शन किए और दर्शन करते ही चल पड़े। यह नहीं पता कि दर्शनों को ही तो सब कुछ मान लेते हैं, क्योंकि दूर का गुण ही ऐसा होता है।

परे का गुरु फूल और नेड़े का गुरु आधा।
धोरे का गुरु गधा, मन में आया तब लादा।।

यह हंसने की बात नहीं है। यह विलाप करने की बात है। कभी मैंने भी अपनी छाती को दोनों हाथों पीटा था। मैंने गुरु की कद्र बताई है। जो इस तरह करते हैं वे गिर जाते हैं।

धोरे का गुरु गधा, मन में आया तब लादा।

सो पास वाले गुरु से तो यही कहते रहते हैं कि अब यह कर अब वो कर दे और अगर वह न करे तो रूष्ट होकर भी बैठ जाएंगे। सो इस तरह से गधे की तरह लाद दिया जाता है। इसीलिए जो परदे में रहते हैं उनकी ही कद्र होती हैं। जो स्त्रियां हमारे मुसलमान भाइयों में बुर्का पहन कर चलती है, उनको सभी देखते हैं कि क्या गया है। क्योंकि वे पर्दे में होती हैं। चाहे उसका चेहरा कोढ़ी भी क्यों न हो। पर सभी देखना चाहते हैं। पर्दे में कद्र हो जाती है। जब पर्दा हटा दिया जाता है तो सारी ही बेकद्री हो जाती है। कद्र समाप्त हो जाती है। सो पर्दा हट जाता है तो क्या

रहता है? पर्दा रहता है तभी अच्छा है। मैंने आप लोगों को बताया। सो आप कह तो बार–बार देते हो–

गुरु से लग्न कठिन है भाई।
लग्न लगे बिन काज न सरिहैं जीव प्रलय हो जाई।।

लग्न कब लगती है? जब हम सतगुरु को कुल मालिक समझते हैं और हमारे दिल में विरह उठती है। विरह और अभ्यास के बिना तो कुछ भी नहीं बनता है। विरह उठनी चाहिए और उस विरह में ही अभ्यास करो। जो इन्सान अभ्यास में नहीं बैठता है वह गुरु की कद्र कभी भी नहीं करेगा। जो इन्सान अभ्यास में दोनों वक्त बैठता है, वह जरूर ही सतगुरु की कद्र करेगा क्योंकि उसे पता लग गया। वह कहता है कि वह सतगुरु तो मेरे अन्दर बैठा है। हम जगह–जगह तलाश करते फिरते हैं। सतगुरु तो तेरे अंदर है। पर आगे वह इसके प्रमाण देता है–

गुरु से लग्न कठिन है भाई।
लग्न लगे बिन काज न सरिहैं जीव प्रलय हो जाई।।

अर्थात् जीव प्रलय में ही चला जाता है। गुरु से कैसे लग्न करनी चाहिए। जैसे पपीहा होता है, उसको चाहे तीर मार दो। वह समुद्र में पानी के किनारे गिर पड़ेगा अपनी जुबान को बंद कर लेगा पर उसे दूसरा पानी अच्छा नहीं लगता है। वह स्वाति नक्षत्र की बूंद का जल ही पीता है। इन्द्र उसकी आस को पूरा करता है। आपने सुना होगा कि जब पपीहा बोलता है तो बारिश जरूर होगी। सो भगवान उसकी आस पूरी करता है। वह नीचे का पानी नहीं पीता। इतनी लग्न होनी चाहिए। जो गुरुमुख होता है वह अपने गुरु को ही जानता है। वह दूसरे को नहीं जानता है।

मैं कई बार एक बात कहा करता हूं। आप लोगों ने सुनी होगी। मेरे महाराज जी बताया करते थे। एक घर में 60 आदमी थे। उस घर में एक लड़की शादी के बाद आई। उस लड़की को

सभी के सभी आदमी इज्जत करते हैं। उससे प्यार करते हैं। पर उसका पति उससे प्यार नहीं करता है। क्या वह जिन्दा रह पाएगी? उसको सोना–चांदी से पीली भी कर दिया गया है और सभी घर के सदस्य उसका खूब आदर करते हैं। उसको हाथों पर रखते हैं। पर उसका पति उससे प्यार नहीं करता है। बताओ क्या वह जिंदा रह जाएगी? तुम लड़की नहीं हो। लड़कियों से यह बात पूछो। इस बात को तो वे ही जानती हैं। जब लड़की अपने पीहर में जाती है और मां सिर नहीं पुचकारती है तो लड़की के साथ क्या बीतती है? इसी तरह जो सतगुरु अपने शिष्यों के सिर पर हाथ नहीं रखता है, उन शिष्यों के साथ भी ऐसे ही बीतती है। सो मैंने आपको यह बात बताई है कि वह लड़की बड़ी दुखी होती है। अगर उसका पति नहीं बोलता है तो वह कुएं में गिर कर मर जाती है या आग लगा कर जल जाती है या अपने बाप के घर चली जाती है कि मेरी पार नहीं पड़ेगी। कहीं और भेज दो। वह सारे ही मोह को दूर कर देती है। केवल एक पति का मोह रखती है। घर में सोने की या दूसरी सारी टूम उतार लो। चाहे फटे कपड़े दे दो और सारे घर वाले चाहे उसको जूतियां मारो अगर उसका पति प्यार से बोल लेता है तो वह किसी की परवाह नहीं करेगी। इसको कहते हैं–

सतगुरु राजी तो कर्ता राजी।
काल कर्म की लगे न बाजी।।

सतगुरु राजी है तो कर्ता भी राजी ही है। फिर काल कर्म की बाजी कभी भी नहीं लग सकती।

हरि रूसे तो रूसन दे, तू भी दे सटकाय।
सतगुरु सिर पे राखिये, आपे करें सहाय।।

इस तरह महात्मा कहते हैं कि वह स्वयं ही मदद करता है। जब हमारा प्रण पपीहे की तरह इतना पक्का होता है उसे ही

सतगुरु से लग्न लगी कहा जाता है। उसको उस शब्द से इतना प्यार है कि वह अपने तन को आगे अड़ा देता है और वह शब्द को सुनने से हटता नहीं है। शब्द गाया करते थे–

ऐरी ऐरी ऊधो ! लागी का नाम मत ले।
मगों की प्रीत लगी नादों से सन्मुख सेल सहे।।
पतंगे की प्रीत लगी दीपक से फिर-२ जीया देय।
मीरां की प्रीत लगी संतों से गुरु चरणों में चित दे।।

ऊधो उसकी ननद थी। वह उसको बताती है कि तू मुझे क्या कहती है कि तू महात्माओं में जाती है। मुझे वे महात्मा बड़े प्यारे लगते हैं। वह कहने लगी कि तू चमार के पास जाती है। मीरां ने कहा–वह चमार नहीं है।

काख में से रांपी काढ़ी, चीरा अपना गात।
चार युगों के चार जनेऊ, आठ गांठ नौ तार।।

अर्थात वह चमार नहीं है उसने तो चार युगों के चार जनेऊ दिखा दिए।

अपने महल से मीरां उतरी घट में गंगा नहा।
पां पूजूं गुरु रविदास के जो मोक्ष लोक लिए जा।।

सभी कुछ रविदास के पास है तू ऐसी बातें मत कह मेरे गुरु के बारे में। इसीलिए कबीर साहब कहते हैं–गुरु से लग्न कठिन है भाई।

जैसे मगा शब्द स्नेही शब्द सुणन को जाई।
शब्द सुने और प्राणदान दे तनिक नहीं डराई।।

वह अपने तन को आगे खड़ा कर देता है और मारने वाला उसको तीर या सेल से मार लेता है। वह उन सेलों से भी पीछे नहीं हटता है। इसी तरह से गुरु से जिसका प्यार है वह तीनों लोक जीत कर आगे चला जाता है। तीनों लोक या तीनों गुणों से आगे चला जाता है। रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण तीनों गुणों को

छोड़ कर चौथे सारगुण में चला जाता है। सो वह बच जाता है। यह गुरु की लग्न है। इसको और भी कह देते हैं–

जैसे सती चढ़ी सत ऊपर, पिया की राह मन भाई।

मैं कई बार मिसाल देता हूं कि पति के साथ जलने वाली स्त्री बड़ी बेधड़क होती है। मगर उसकी मियाद लिखी है। गरीबदास जी कहते हैं कि वह आठ लाख और कुछ हजार वर्ष तक स्वर्ग में रहती है जो अपने पति के साथ जलती है। पर वह पतिव्रता नहीं मानी जाती। बड़ाई तो मैं उसकी करता हूं कि उसको इतना फल मिलता है। असली पतिव्रता तो अहंकार से ही चली जाती है। आपने यह बात सुनी होगी।

कहते हैं कि एक दिन राजा भरथरी आ रहा था और एक स्त्री अपने पति के साथ जलने के लिए जा रही थी। राजा ने कहा–ये क्या खेल है? लोगों ने कहा–इसका पति मर गया है यह उसके साथ सती होगी। राजा ने पूछा–क्या यह जिंदा जल जाएगी? उन्होंने कहा–हां। उसने कहा–ये तो बड़ी भाग्यशाली है। स्त्री हो तो ऐसी ही होनी चाहिए। देखो, अपने पति के साथ जिन्दा जलती है। ये बातें कहकर अपने घर आ गया। जब वह घर पर आया तो घरवाली से उसने कहा–रानी! आज तो मैंने एक पतिव्रता स्त्री को देखा। उसने पूछा–कैसी थी? उसने कहा–उसका पति मर गया और वह उसके साथ चिता में जल रही थी। उसने कहा–अच्छा! वह तो पतिव्रता नहीं थी। रानी ने कहा–वह असली पतिव्रता नहीं थी। राजा ने पूछा–असली कैसी होती है? रानी ने कहा–वह इतनी देर भी जिन्दा कैसे रह गई? असली होती तो इतनी देर तक वह जिन्दा ही नहीं रहती। असली पतिव्रता तो अपने पति का चोला छुटते ही चोला छोड़ देती है। राजा ने सोचा–रानी ने तो घमण्ड की बात कह दी है। इसकी परीक्षा करूंगा। इस परीक्षा में उसने रानी ही खो दी। दूसरे दिन वह

जंगल में चला गया और किसी को उसने कपड़े सौंप दिए और कह दिया कि ये मेरे कपड़े और हथियार ले जा। ये सब रानी को दे देना और कह देना कि राजा को तो शेर ने मार दिया है। वह लेकर गया और उसने कपड़े और हथियार यही कह कर कि राजा को तो शेर ने मार दिया है, रानी को संभलवा दिए। रानी ने कहा–ऐं। और ऐं के साथ ही उसके प्राण निकल गए। देखा तो रानी मर गई है। वापिस राजा के पास जाकर उसने कहा–राजन! आपने यह क्या परीक्षा ली। आप तो बिना रानी के हो गए। रानी मर गई है। सो मैं इन माताओं की बड़ाई करता हूं कि इन्होंने तो अपने मुर्दा पति जिंदा कर लिए। पर भरथरी जैसे अपने आप को कुछ बताया करते थे। वह अपनी रानी को जिन्दा नहीं कर सका। इनमें अगर दो ऐब न हों तो ये माताएं अनुसूया और सीता हैं। इनकी कोई बराबरी नहीं कर सकता। दो ऐब चोरी और जारी के हैं। ये दो ऐब ही इनका नाश करते हैं। सो इनमें बड़े भारी गुण हैं। माता अनुसूया ने ब्रह्मा, विष्णु और महेश छः–छः महीने के बना दिए थे। सावित्री अपने पति सत्यवान को यम के हाथों में से छुटा लाई। नर्मदा ने अपने कोढ़ी पति को कंचन देह वाला बना दिया। कितनो की साखें दूं? पर एक भी साख आप अगर दे दो तो मैं सुनूं। किसी राजा या महात्मा ने कभी अपनी पत्नी को जिन्दा कर लिया हो। तुम्हें तो पता नहीं है। मैं बता दूंगा। वह जिन्दा करने की बात दूसरी ही थी। किसने की? मैं बता देता हूं। जमदग्नि कौन था? वह परसराम का बाप था। सो वह परसराम की ही दया थी। उसकी माता का नाम रेणुका था और वह पानी भरने के लिए गई थी। वहां किसी साधु महात्मा को मच्छर के रूप को धारण करके क्रीड़ा करते हुओं को देख आई। इससे उसका मन डिग गया। जब वह वापिस कई देर में आई तो जमदग्नि ने पूछा–इतनी देर कहां लगाई? उसने बात टाल मटोल की। वह महात्मा जानता था कि

वह इस तरह बहक गई है। उसने अपने बेटों से कहा–तुम अपनी मां का सिर काट लो। उन्होंने कहा–हम अपनी मां का सिर नहीं काट सकते। मां का सिर काटा नहीं करते। इतनी ही देर में उसने परसराम को याद किया और परसराम आया। उसने पूछा–क्या बात है, पिता जी? उसने कहा–तुम अपनी मां का सिर काट दे, ये पापिन है। जब उसने हुकम दिया तो उसने अपनी मां का सिर काट दिया। अगर कोई काटे तो वह परसराम जैसा ही पुत्र होना चाहिए। जमदग्नि जैसा पति होना चाहिए। तब तो तुम काट भी सकते हो। नहीं तो काट न देना। मारे जाओगे। कभी कह बैठो कि अभी तो सेवा करने के लिए कह रहे थे और अब सिर काटने के लिए कहने लग गए। परसराम ने सिर काट दिया और सिर काटते ही उसके पिता जमदग्नि ने कहा–बेटा! तू बड़ा आज्ञाकारी है। तू मांग क्या मांगता है। मैं तुझे वही वचन दूंगा। परसराम ने कहा–मेरी मां को जिन्दा कर दे। मेरे भाइयों के प्रति जो विचार बनाए थे, उन्हें मोड़ लो। ये मां का सिर कैसे काट सकते थे? ये करणी के धनी नहीं थे। उसके पिता को उसकी बात माननी पड़ी और उसको जिन्दा कर दिया। यही एक इतिहास ऐसा है। इसका तुम्हें पता नहीं था। मैंने आज बता दिया है। उन ऋषियों का काम ऐसा था। इन माताओं ने तो अपने कितने ही पतियों को जिन्दा कर लिया। तो यही बात है।

जब वह मर गई और भरथरी ने देखा कि ये तो नाश ही हो गया। वह दूसरी रानी को शादी करके ले आया। जब दूसरी रानी आई तो वह ऊपर से तो कहती थी कि मैं पतिव्रता हूं। पर अंदर उसके विषय–विकारों की आग जलती रहती थी। राजा घूमने के लिए गया। एक ब्राह्मण सूर्य महाराज का तप कर रहा था। सूर्य महाराज ने खुश होकर उस ब्राह्मण को अमर फल दे दिया। वह अमर फल उस ब्राह्मण ने ले लिया और फिर उसने सोचा कि इस

अमरफल का क्या करना चाहिए?

मेरी तो सुनी हुई बातें हैं। मैं पढ़ा लिखा नहीं हूं। मैं शास्त्र नहीं जानता हूं। पर जो बातें कहता हूं वह एक ढंग की बात ही बताऊंगा। शास्त्र के विरूद्ध कभी नहीं बोलूंगा। ब्राह्मण ने सोचा कि अगर यह फल राजा भरथरी को दे दूं तो अच्छा रहेगा। ऐसा राजा मिल ही नहीं सकता है। अगर यह जिंदा रहेगा तो दुनिया सुखी रहेगी। वह ब्राह्मण उस फल को लेकर उस राजा के पास आया और बोला–महाराज ! यह फल लो। मैंने तप करके प्रगट किया है। मुझे मिल गया है। मैं यह फल खाकर क्या करूंगा? आप राजा हो इसे खा लो तो अमर हो जाओगे। आप दुनिया का भला करोगे। राजा ने सोचा कि मैं इस अमरफल को खा लूंगा तो मैं जवान ही रहूंगा। एक रानी तो मर गई और यह भी तेरे सामने ही मर जाएगी। ऐसा ठीक नहीं है। सो यह अमर फल रानी को ही देना चाहिए। राजा ने वह अमर फल अपनी रानी को दे दिया। रानी ने पूछा–यह क्या है? राजा ने कहा–यह अमर फल है, अगर इसे खा लेगी तो तू हमेशा नौ जवान ही रहेगी। तू कभी बूढ़ी नहीं होगी। इसे खा लो। उसने उस फल को ले लिया। उसने सोचा कि तू अमर फल को खा लेगी तो तू तो जवान हो जाएगी। पर तेरा यार अगर मर गया तो तू सारी उम्र ही रोएगी। उसने सोचा कि यह तो उस यार को ही दूंगी। उसका यार एक कोतवाल था। जब कोतवाल आया तो वह अमर फल उसको दे दिया। उसने पूछा–यह क्या है? रानी ने कहा–यह तो अमर फल है। इसको खा लेगा तो अमर हो जाएगा। पगला! इसको तू खा ले। इस प्रकार से मुझे मिला है। तू हमेशा जिन्दा रहेगा तो मैं चाहे मर भी जाऊं। कोई दुख नहीं होगा। तू अगर मर गया तो मुझे दुख हो जाएगा। उसने वह अमरफल ले लिया। पर वह एक रंडी के पास जाया करता था। उसने सोचा कि अगर मैं इसको खा लूंगा तो वह रंडी

पहले मरेगी और दुख हो जाएगा। उसने वह अमर फल ले जाकर उस रंडी को दे दिया। भले आदमी से बुरा काम हो जाए और बुरे आदमी से भला काम हो जाता है। यह बस की बात नहीं होती। उस अमर फल को रंडी ने ले लिया। रंडी ने उसे लेकर कह दिया कि मैं इसको खा लूंगी, आप जाओ। रंडी ने सोचा कि तू खोटे काम करती है। सारी जिन्दगी ही खोटे कर्म किए और अगर यह अमर फल खा लेगी तो कभी भी बूढ़ी नहीं होगी और तू सारी जिन्दगी खोटे कर्म ही करती रहेगी। यह अमर फल तेरे लायक नहीं है। इसे तो ऐसे आदमी को देना चाहिए कि इस अमर फल को खाकर वह अमर हो जाए और वह अच्छा काम करेगा तो दुनिया का भला होगा। ऐसा कौन हो सकता है? उसने सोचा कि ऐसा तो राजा भरथरी ही है। वह अमर फल लेकर राजा भरथरी के पास आ गई। राजा की सभा बैठी हुई थी। वह रंडी उसकी सभा में आकर खड़ी हो गई। राजा ने पूछा–क्या बात है माता यह अमर फल कहां से लाई? उसने कहा–आप यह मत पूछो। मुझे कोई देकर गया था और मैं इसके लायक नहीं थी। आप इसके लायक हो। आप इसे खा लो। आप राजा हो, दुनिया का भला करोगे। राजा ने पूछा–लाई कहां से है? उसने कहा–मुझे तो कोतवाल दे गया था। अब राजा ने कोतवाल को बुला लिया। उससे राजा ने पूछा–यह अमरफल कहां से आया? उस कोतवाल ने टालमटोल की। राजा ने कहा–घबराओ मत! मैं कुछ भी नहीं कहूंगा। कोतवाल ने कहा–मैंने तो रानी से लिया था। अब राजा ने रानी को बुला लिया और उसने पूछा–रानी! वह अमरफल कहां है? रानी ने कहा–वह तो मैंने खा लिया है। राजा ने कहा–तू झूठ तो नहीं बोलती है। रानी ने कहा–नहीं। ज्यादा सौगन्ध खाने वाला आदमी अच्छा नहीं होता है। वह सौगन्ध खाने लगी तो राजा ने अमरफल निकाल कर दिखाते हुए कहा–यह है। यह अमर फल

वही है कि नहीं? सबसे पहले तो मुझे ही लानत देता हूं। जैसे मैंने एक दिन सत्संग में ये बात कही थी कि ए इन्सान! अपने आपको लानत दे कि जब आदमी का चोला मिल गया है और फिर भी मैंने परमात्मा की प्राप्ति नहीं की है, शुभ काम नहीं किया और अच्छे रास्ते पर नहीं चले। इसीलिए हम अपनी आत्मा को ही धोखा देते हैं। इससे बुरा हम और क्या कर सकते हैं? स्वयं को लानत देनी चाहिए कि हम घटिया हैं और हमें अच्छा काम करना चाहिए। शुभ काम आदमी ही कर सकता है। पशु तो नहीं कर सकता। देवी–देवता भी नहीं कर सकते। शुभ काम तो इन्सान ही कर सकता है। राजा ने स्वयं को ही सबसे पहले लानत दी कि तूने रानी के मोह में आकर अमरफल इसको दे दिया। रानी तुझे भी लानत है कि तू राजा को छोड़ कर एक कोतवाल के पीछे फिरती है। कोतवाल तेरे को लाख लानत हैं कि तू एक सिंहनी को छोड़ कुत्तियों के पीछे फिरता है। सबसे वफादार और सबसे अच्छी तो ये रंडी है, जिसने सारे देश का भला सोचा और राजा को अमरफल लाकर दे दिया। अब सोचो! वह अमरफल सभी के पास में है। उस अमरफल की तुम कद्र नहीं करते हो। वह अमरफल अगर तुम हिफाजत से बरतो तो तुम अमर हो जाओगे। आत्मा तो अमर है ही। फिर अमर होने का मतलब यही है कि तुम फिर इस संसार में नहीं आओगे। वह अमरफल रामनाम है। वह अमरफल उस मालिक का धुनात्मक नाम है। राम भी तो चार हैं–

एक राम दशरथ घर डोले। एक राम घट-घट में बोले।।
एक राम का सकल पसारा। संतों का राम इन तीनों से न्यारा।।

सो वह सारी दुनिया का कर्ता जो राम है, वही अमरफल है। उसका सुमरन करने से हम अमर हो जाते हैं और कोई अमरफल किसी ने देखा हो तो बताओ। लोग बड़ाई करते हैं कामधेनु गाय और कल्पतरू की और अमरफल की भी करते हैं। कामधेनु गाय

और कल्पतरू वक्ष क्या है? अगर सच्चा हो तो सत्संग ही कल्पतरू वक्ष है। यह कल्पतरू वक्ष है और मन की इच्छा पूरी करता है। कामधेनु गौ ओ३म् है। मुक्ति के लिए ओ३म् नहीं है। जिसने ओ३म् को सिद्ध कर लिया उसने सब कुछ बना लिया। जिसने उसे सिद्ध कर लिया तो त्रिलोकी को ही जीत लिया है। तीन लोक में औ३म् ही सब से बड़ा है। मुक्ति के लिए तो तीन गुणों से आगे और ही नाम है। आगे चलना पड़ेगा। सो मैं आपको बताता हूं। वह सबसे बड़ा अमरफल तो धुनात्मक नाम है। उस धुनात्मक नाम में पहुंच जाओगे तो बाजी जीत जाओगे। इसे कहते हैं–

गुरु से लग्न कठिन है भाई।

जिसने उस अमरफल को खा लिया है वही अमर हो गया। वह सभी के पास है। कितना कहूं? कबीर साहब कहते हैं–

कहता हूं कह जात हूं काहे बजाऊं ढोल।
सांसा खाली जात हैं तीन लोक का मोल।।

इक्कीस हजार छः सौ छः सांस आते हैं और बर्बाद कर देते हो। अगर तुम अमरफल को याद करो तो बच सकते हो। एक सांस तीन लोक का है। क्या तुम इन २१६०६ सांसों की कद्र करते हो? यही तो एक अमरफल है। इस अमरफल को खा लोगे तो अमर हो जाओगे। वह अमरफल धुनात्मक नाम है। वह अमरफल कहां लगता है? वह तुम्हारे अंदर ही है। पर कोई भेदी ही आ जाए तो बता सकता है। पहले एक बात तुमको ऐसी बताई है जो कभी भी तुम्हें सत्संग में नहीं बताई गई थी। पर तुम्हें वह बात याद नहीं हो तो तुम्हारी मर्जी है कि संत सतगुरु इस अमरफल को कब खिलाते हैं? अधिकारी होते हैं। किसी की सुरत किसी मंजिल पर है और किसी की किसी मंजिल पर है। उसकी वहां बैठक है। वह उन सारी मंजिलों से निकाल कर राधास्वामी धाम में ले जाता है उस सुरत को। फिर जितनी मंजिलों के जहां उसके कार्य होते हैं

उनको वे काटते हुए चलते हैं। जिसके मन की बैठक छठे चक्कर पर है और हमने उसको नाम दे दिया नीचे गुदा चक्र का। तो वह सतगुरु उसको नाम नहीं दे सकता है। जिसकी सुरत की बैठक सतलोक में हैं नाम दे दिया उसको उससे नीचे का तो हम उसके कर्म नहीं काट सकते। सतगुरु उन मंजिलों के अंदर से चलता है। सतगुरु उनके कर्मो को दग्ध करता हुआ जाता है। जिस जीव के कर्म जिस मंजिल पर होते हैं ऊपर जहां सुरत बैठती है उसी को दग्ध कर देते हैं। इसी कारण से हमारे देश में कितने ही मत फैल गए हैं। उन गुरुओं में यही एक कमी थी कि एक चीज बता दी और कह दिया कि फिर बताऊंगा। इतने ही बीच में गुरु ने चोला छोड़ दिया। सेवक उसी का ठेकेदार बन जाता है। फिर आगे जाने का उसे पता नहीं है बस वही बात रटता रहता है और उसके जो चेले रटते हैं तो वे भी उसी चीज को रटते रहते हैं। इसलिए उन बेचारों को पता ही नहीं रहता है। पर आप कह सकते हो कि राधास्वामी मत में ऐसा नहीं हो सकता है? इस मत में भी हो सकता है और ये भी भूल जाएंगे जैसे और मतों वाले भूल गए हैं। ये भी जरूर ही भूल जाएंगे। पर स्वामी जी महाराज की वाणी टेढ़ी है। भूल तो वे जाएंगे पर संत सतगुरु धुर से जीवों को लेने के लिए आता है। वह कभी भी इन बातों में नहीं फंसने देगा। वह उस मंजिलों का निर्णय करके उन जीवों को ले जाएगा। दो गुरु आते हैं। एक गद्दी का और दूसरा करणी का। करणी का गुरु जीवों को लेने के लिए आता है और गद्दी का गुरु जीवों को बांधने के लिए आता है। तुम्हें पता है कि बंधा हुआ पशु कितना दुख पाता है। इसी प्रकार से तुम मजहबों में जाकर बंध जाते हो। अपने आगे पीछे को बर्बाद कर लेते हो। मजहब में आना तो बुरा नहीं है। मजहब में बंधकर मर जाना बुरा है। ये गद्दी के गुरु मजहबों में बांध कर मार देते हैं। अगर कोई पूछना चाहता है तो

मैं आपको और भी बातें बता सकता हूं। अगर तुम इस बात को समझ गए हो तो तुम्हारा भाग्य अच्छा है। ये बंध जाते हैं फिर निकल नहीं सकते और इतने लकीर के फकीर बन जाते हैं कि उन्हें फिर बड़ी मुश्किल हो जाती है। अगर खुदा भी आकर कहे तो भी नहीं मान सकते। क्योंकि उनके कर्म ही खोटे होते हैं। उनकी मन की बैठक ही ऐसे चक्करों पर होती है कि वे उस दायरे से निकल नहीं सकते। इसीलिए आपको ये थोड़ी बातें बताई हैं। सारी ही बता गया–

गुरु से लग्न कठिन है भाई।
लग्न लगे बिन काज न सरिहै, जीव प्रलय हो जाई।।
दो दल सन्मुख आन जुड़े हों, सूरा लेत लड़ाई।
टूक टूक हो गिरे धरण में, खेत छोड़ नहीं जाई।।

जब दो दल लड़ाई में इधर उधर से आ कर भिड़ते हैं तो ये बाहर की बातें बताता हूं कि जब दोनों दलों में लड़ाई होती है तो कायर तो भाग जाते हैं। शूरवीर होता है वह टक्कर ले लेता है। आपने सुना है–

सूरों के मैदान में कायर का क्या काम।
लड़ सके न भाग सके, फेर लगा पछतान।।

ऐसा कुछ कहते हैं–

देखा देखी हीजड़ों ने बांध लिए हथियार।
सुत्थन में मूतन लगे, जब बजने लगी तलवार।।

सो जब दोनों तरफ से लड़ाई करते हैं शूरवीर ही लड़ाई करता है बाहर की लड़ाई जो लड़ता है उसी को पेंशन मिलती है। पर अंतर में भी लड़ाई होती है। जो गुरुमुख होता है वह भी लड़ाई करता है। वह कौन सी लड़ाई लड़ता है? जब वह उन द्वारों को बींधता है और आगे चलता है तो उन द्वारों के मालिक उसे रोकने की कोशिश करते हैं। आप कहोगे कि क्या इन द्वारों के मालिक

भी हैं? तो क्या आपको इस बात का पता नहीं है? उन द्वारों पर जब पहुंचोगे तो सभी के मालिक तुम्हें मिलेंगे। इसी कारण तो मन जगह जगह पर अटक जाता है और जगह जगह जीवों के कर्म बंध हुए पड़े हैं। सो जब तुम द्वारों पर जाओगे कहीं पर गणेश है और कहीं पर ब्रह्मा और विष्णु है। कहीं शिव और दुर्गा भवानी है। कहीं जोत निरंजन है कहीं ओ३म् है, कहीं सोहम् है। इस तरह कितनों की बातें पूछोगे। कहीं अलख अगम और अनामी है और कहीं फिर राधास्वामी नाम है। वह राधास्वामी धाम है। सो ही इनसे लड़ाई करनी पड़ती है। जब अंतर में सुरत जाती है तो वहां भी लड़ाई करती है और वहां भी दोनों दल लड़ाई करते हैं। ये दल कौन कौन से हैं? इस मन राजा की दो रानियां हैं–प्रवति और निवति। प्रवति के बेटे कौन से हैं और निवति के कौन से हैं? निवति किसे कहते हैं और प्रवति किसे कहते हैं? निवति कहते है सतमार्ग पर चलने को और उसके बेटे है–शील, सन्तोष, विवेक और विचार और प्रवति के बेटे कैसे है काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। ये विषय–विकारों में फंसा देते हैं। दोनों का झगड़ा चलता है और दोनों के सूर (शूरवीर) लड़ाई करते हैं। कायर घबरा जाते हैं। इन मंजिलों को इस प्रकार से तय किया जाता है। अंतर में क्या मिलता है? कइयों को अपने मन की संकल्प सिद्धियां आ जाती हैं। कई वहीं हार जाते हैं। कई ऋद्धि–सिद्धियों में फंस जाते हैं और कई नौ निधियों और करामातों में फंस करके हार जाते हैं। लड़ाई नहीं करते। गिर जाते हैं। वहीं रह जाते हैं। यह मैं कई बार कहता हूं। ये नितानन्द जी की वाणी है।

आठ सिद्धि नौ निधि की अटक न माने, आगे कदम बढ़ावे।
तब कोई राम भक्त गति पावे।।

तब कोई राम की भक्ति कर सकता है। सो इस लड़ाई का जीतना कठिन है–

गुरु से लग्न कठिन है भाई।

जो गुरु के चरणों पर गिर पड़ता है और जिसने गुरु के रूप की स्याही बना कर नैनों में डाल ली है वही इनसे जीत कर आगे चला जाता है। सो दोनों स्थानों की लड़ाई में जीतना है। इस संसार का झमेला बहुत ही कठिन है। इस संसार से बचना चाहते हो तो संशय को दूर कर दो। पर संशय मर्जी से दूर नहीं होता। कोई पूरा सतगुरु मिलता है वही संशय को दूर करा सकता है। जब संशय दूर होता है तभी संसार से पीछा छुटता है। संशय दूर हो जाता है तो कोई चीज बाकी नहीं रहती। जब तक इन्सान को भ्रम रहता है तब तक ही भ्रांति बनी रहती है। भ्रांति रहती है तो शांति नहीं आती है। सतगुरु भ्रांति को दूर कर देता है। इसीलिए हमें सतगुरु के चरणों की धूल बनना पड़ता है। कहने वाला तो काफी कह देता है। मस्तक लाग रही गुरु चरणों की धूल। पर यह पता नहीं है कि वह कहां लगी हुई है। कहते रहते हैं–

चरणों में राखियो, चरणों में राखियो।

मेरे पास काफी ऐसे लोग चरणों में रहने वाले आए हैं। जब कोई बात आ पड़ी तो उन्होंने कह दिया कि तेरे जैसे बहुत देखे हैं। मैं तो कहीं और सतगुरु बना लूंगा। आप बताओ। क्या वे बन गए? पर वे बात यही कहते हैं कि चरणों में राखियो जी। चरणों में रहना बड़ा मुश्किल है। चरणों में तो वही रह सकता है। आप तुलसीदास की साख ले लो। वे कहते हैं–

काम, क्रोध, मद, लोभ की, जब तक घट में खान।
तुलसी पंडित और मूर्खा, दोनों एक समान।।
कामी, क्रोधी, लालची, गुरु इनसे भक्ति नहीं होय।
भक्ति करे कोई सूरमा, जाति वर्ण कुल खोय।।

जब तक अहंकार बाकि है तब तक भक्ति नहीं कर सकते। भक्ति करनी है तो अहंकार को दूर कर दो। किसी को किसी चीज

का अहंकार है, किसी को किसी चीज का अहंकार है। इसीलिए कबीर साहब की ये वाणी थी। कबीर साहब कहते हैं–

दो दल सन्मुख आन जुड़े हों, सूरा लेत लड़ाई।

अर्थात् शूरे लड़ाई लड़कर आगे बढ़ जाते हैं, ये गुरुमुखों का ही खेल है मनमुखों का खेल नहीं है। स्वामी जी ने भी कहा है–

गुरुमुख हो सो आगे पंथ चलाई।

गुरुमुख हो तो आगे पंथ चला देता है। फिर जब आगे पंथ वह चला देता है। तो गुरु क्या कहता है–

सतगुरु जब आकर सत्संग करता है तो गुरु कहता है कि अब जगत का उद्धार होता नजर आ रहा है। क्योंकि जब पूर्ण सतगुरु नाम दे देता है तो वह चार जन्म तक निश्चय ही तिर जाता है। उसका उद्धार होगा चाहे किसी भी तरह हो। उसके कर्मों का भोग भोग कर वह फिर आ जाएगा। पर उसका उद्धार निश्चय ही चार जन्मों तक होगा। यह संतों की साख बताता हूं। अगर पूर्ण सतगुरु मिल गया है तो उसके कर्म शनै–शनै कट जाते हैं। आगे कबीर साहब आखिर में कहते हैं–

छोड़ो तन अपने की आशा निर्भय हो गुण गाई।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, नहीं तो जन्म नसाई।।

यही बात मैं कह भी गया हूं। पर फिर कहता हूं कि जो अपने तन की आशा रखता है वह कभी भक्ति नहीं कर सकता। जो अपने तन की आशा छोड़ देता है वह निर्भय होकर गुण गाता है। उसे किसी चीज का भय नहीं होता। जब तक तुम जीने के लिए खाते हो तो बच जाओगे। अगर खाने के लिए जीओगे तो मर जाओगे।

जिसने भी अपने तन की आशा छोड़ी वे दुनिया में अपना काम कर गए। तुमने किसी की मिसालें भी देखी होंगी। कैसेटें देखी होंगी। तप करने वालों के पांव और सिर सूख गए। घोर तप

किए। पथ्वी तक डगमगा गई। सब कुछ कर गए तभी तो वे कर सके जब उन्होंने तन की आशा छोड़ी। सो जब तुम छठे चक्कर से आगे चलते हो तो तन की आशा को छोड़ दो। अगर इस शरीर को पालते रहोगे तो आगे नहीं जा सकते। आप कहोगे कि आप भी तो झोटे की तरह पले पड़े हो। मैं कहता हूं कि जैसा मैं पला पड़ा हूं उसे तो मैं ही जानता हूं। अगर तुम मेरी तरह पल जाओगे तो तुम्हारा जीवन सफल हो जाएगा। हमें पलने को देख कर घबराना नहीं है। ये पलना, पालना कुछ नहीं है। ये तो रोना–पीटना है। सो–

छोड़ो तन अपने की आशा निर्भय हो गुण गाई।

अर्थात् निर्भय होकर मालिक का गुण गाओ। वह मालिक बाहर नहीं है। तुम्हारे पास में ही है।

क्यों फिरे भटकता बन में, तू देख उलट कर मन में।

वह तो तुम्हारे अंदर ही है। मालिक दूर नहीं है। मेरे महाराज भी ऐसी बातें कहा करते थे।

तेरे भीतर बसता आप धनी।
तिल के ओहले पहाड़ खड़ा, चादर खूब तनी।।

अर्थात् इन दो तिलों के ओहले पहाड़ खड़ा है और चादर तनी हुई है। तेरे भीतर धनी आप बसता है। कबीर साहब भी यही कहते हैं–

तेरे घट के अन्दर नूर बाहर क्यों भटके भाई।

नितानन्द जी भी यही कहते हैं–

घट में झलका जोर, बाहर क्या देखे।

महात्माओं ने तो सभी ने मालिक को घट में ही बताया है। बाहर किसी ने नहीं बताया। बाहर तो तभी बताते हैं जब पूरा साधन बन जाता है। तब बाहर भीतर एक जैसा ही हो जाता है।

कबीर साहब की वाणी थी। मानों तो आप की मर्जी न मानो

आपकी मर्जी। दिनोद आश्रम में बैठे हुए थे, कई आदमी मेरे पास थे। बात चल पड़ी। मैं अब भी कह देता हूं कि मैं सब का गुरु नहीं हूं। मैं तो सब का चेला हूं। आप कहोगे कि यह उल्टी बात कैसे कहते हो? क्या आपको पता नहीं है? गुरु देता है चेला लेता है। नहीं गुरु लेता है और चेला देता है। आप भी इस बात को मानोगे कि बाप लेता है बेटा देता है। मैं तो आप लोगों का बेटा हूं। आपको देता रहता हूं। मैं तो आप लोगों का शिष्य हूं। शिष्य गुरु को देता रहता है। अगर तुम झोली पसार कर न लो तो तुम्हारी मर्जी है। शिष्य का काम हाजरी बजाना है। अपने बुजुर्गों को कुछ न कुछ देना है। पर उन बुजुर्गों को भी सोचना चाहिए। उस वस्तु को बर्बाद न करें। उसे अच्छी तरह रखें। जो नाम है राधास्वामी नाम है, इसको अच्छी तरह रखना। यह सारी ही दुनिया की जान है। इस तरह से जैसे सभी का बीज पानी है। सो सब का खजाना मिट्टी है। इसी तरह दोनों चीजों का भंडार राधास्वामी नाम है। सभी इसी में से निकले हैं। इसीलिए इसे मूल मंत्र कहते हैं। मेरी बात किसी को गलत लगती हो तो मेरे पास आकर प्रश्न कर लेना। मैं खुदा नहीं हूं। पर मेरे सतगुरु की बड़ी भारी दया है। उनकी दया से मैं चार बातें कह देता हूं। सो, आप वह काम करोगे तो आप भी सीख जाओगे इन बातों का साधन अभ्यास करो, अंतर का तजुर्बा देखो। अंतर की मंजिलों को तय करना सीखो। फिर ऐसी गति हो जाएगी।

बैठे ऊठे खड़े उताने। कहैं कबीर हम उसी ठिकाने।।

कोई ज्यादा तकलीफ पाने की जरूरत ही नहीं रहेगी। आहिस्ता–२ काम बन जाएगा। लगे रहो, लगे रहो मेरे भाई। ध्रुव की, प्रहल्लाद की, बन गई तेरी भी बन जाएगी। मैं तो अपनी सच्ची आत्मा से कहता हूं। जिनको नाम मिल गया है वे जरूर भी तिरेंगे। उनका उद्धार होगा। नाम मंजिलों का होना चाहिए। ऐसा न हो कि

बनावटी नाम लेकर ही बैठे रहो। सो, दो घंटे सत्संग कर दिया। मुझे ख्याल आया कि तू बड़ा जुल्मी है। तू आराम से बैठ गया संगत सारी बाट देखती है। सो ही मैं आपकी हाजरी मैं फौरन उठ कर आ गया। तुम्हारे बेटे भी तुम्हारा इतना कहा नहीं मान सकते। सो ही मैं तो तुम्हारा गुरु नहीं हूं। मैं तो तुम्हारे पुत्रों की तरह हाजरी बजाता हूं। सोचो! मैंने क्या बात कही है। इसके ऊपर अमल करना। कभी गाफिल होकर अपना जीवन बर्बाद कर लो। मेरा सत्संग तुम्हें वैतरणी पार ले जाएगा। उपदेश का काम करेगा अगर तुम अमल करोगे तो। मैं पाखण्ड करने नहीं आया हूं। अपना काम करो। मैं तुम्हारे सिर पर भार नहीं रखता। कमा कर टुकड़ा खाता हूं और हाजरी बजा देता हूं। पूछा जाए तो ठीक है–

तरूवर सरोवर संतजन चौथे बरसे मेंह।
परमार्थ के कारणे, चारों धारैं देह।।

संत महात्मा तो तिरे तिराये होते हैं। सतखण्ड से आते हैं जीवों को लेने। उन्हें क्या गर्ज पड़ी है? फिर भी वे हमारी खातिर कितने दुख सहते हैं? वे खाना छोड़ देते हैं। नहाना छोड़ देते हैं। काम करना छोड़ देते हैं। हमें शिक्षा देने के लिये सब कुछ छोड़ देते हैं। फिर भी हम नहीं सोचते। हम उनकी जान के ग्राहक बन जाते हैं। उनसे मजाक करते हैं, पर इन मजाक करने वालों का भी उद्धार कभी न कभी मालिक करेगा। पर करेगा किस तरह? उद्धार तो रावण का भी हुआ और विभीषण का भी हुआ। रावण ने तो अपने कुटुम्ब का नाश करवा करके उद्धार करवाया। विभीषण ने अपनी बिरादरी को रख भी लिया और राज भी किया और मोक्ष में भी चला गया। सो जो संतों से बैर करते हैं उनका सर्वनाश हो जाता है। कहते हैं–

संतों की निंदा करे, मूर्ख काढ़े खोट।
बिन मारे मर ज्यांगे, पड़े गजब की चोट।।

यही महात्मा गरीबदास जी कहते हैं–

राम कहें मेरे संत को, दुख मत दीजे कोय।
संत दुखाए मैं दुखी, मेरे आपे भी दुख होय।।
हिरण्याकुश उदर बिदारिया, मैं ही मारा कंश।
जो मेरे संत को आन सतावे, उसका खो दूं वंश।।
तेतीस कोटि की वंध छुटाई, रावण मारा खेत।
कला बढ़ाओ मेरे संत की प्रगट करिहे मोय।।
गरीब दास सतगुरु कहे, मेरा संत न निदिये कोय।।
संत का निंदक महा हत्यारा। संत का निंदक लजमारा।।

इसीलिए बचकर रहना चाहिए। अपना जीवन पवित्र रखो। अपना काम करो। काम करोगे तो अपना सुधार कर जाओगे। मेरा काम शिक्षा देने और कहने का था। आगे तुम्हारी मर्जी सब को राधास्वामी।

।। राधास्वामी।।

ध्यानाकर्षण बिन्दू

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी-2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।

जून/जुलाई मास के लिए सेवा कार्यक्रम

1.	सिचावली	20 जून	-	26 जून
2.	दादरी	27 जून	-	03 जुलाई
3.	सिवानी	04 जुलाई	-	10 जुलाई
4.	हिसार	11 जुलाई	-	17 जुलाई
5.	हांसी	18 जुलाई	-	24 जुलाई

जीवों को बीमारी क्यों होती है !

महर्षि शिवव्रत लाल जी

जीवों को बीमारी क्यों होती है? भूले और भटकों को राह पर लाने के लिये तथा तन्दुरूस्ती अर्थात् निरोग शरीर, शुद्ध अन्त:करण और बुद्धि की कदर कराने के लिये।

यह बीमारी कभी-कभी भूले भटकों को सच्चाई का रास्ता दिखाती है। एक आदमी है जो दुनिया को ही सब कुछ समझ रहा है। उसके सामने राम का नाम लो। वह नाराज हो जायेगा, क्योंकि मालिक का नाम लेने से उसे चिढ़ है। वह समझता है कि राम के नाम लेने की हमको बिल्कुल आवश्यकता नहीं है। ''खुब खाओ, पिओ, चैन उड़ाओ'' ही उसका ध्येय है मगर जब बीमारी आती है तब विवशता से उसके मुंह से राम का नाम आप ही आप निकलने लगता है।

उस समय उसको राम याद आता है। जो जातियां जाति (कौम) की दृष्टि से दुनिया की पुजारी हो जाती हैं, दुराचरणों के प्रभाव के इकट्ठे हो जाने के कारण उसमें युद्ध होता है, अकाल पड़ता है और महामारी फैलती है और कष्ट भोगते हैं। तब जाकर फिर ठिकाने पर आते हैं। यह सब रोग है जिनके हजारों ही रूप हैं।

जब तक कोई आदमी रोगी नहीं होता तन्दुरूस्ती की कदर नहीं करता। बिमारी ही उसे समझा देती है कि तन्दुरूस्ती भी कोई चीज है। यह तन्दुरूस्ती कई तरह की होती है। शारीरिक व्यवस्था के साथ समता का बर्ताव करना शारीरिक तन्दुरूस्ती है। मन की चंचलता और अशान्ति को त्यागना और एकाग्र चित होना मानसिक तन्दुरूस्ती है। मस्तिष्क का भली चंगी दशा में रहना, बैचेन न होना, घबराहट में न आना यह मस्तिष्क की तन्दुरूस्ती है। रोग इस दृष्टि से बरकत की वस्तु है। धन्य हैं वे लोग जो इसको बरकत की वस्तु समझकर इससे लाभ उठाते हैं और भविष्य के लिये सावधान बन जाते हैं।

अनमोल वचन

जैसे गूंगे के संकेत को गूंगा ही पहचानता है, उसी प्रकार ज्ञानी के सुख को वही जानता है जो स्वयं ज्ञानी होता है।

-सन्त कबीर साहिब

दुष्टों का बल है हिंसा, राजाओं का बल है दण्ड, स्त्रियों का बल है सेवा और गुणवानों का बल है क्षमा। *-महात्मा विदुर*

भयभीत व्यक्ति तप और संयम की साधना छोड़ बैठता है वह किसी भी गुरुतर दायित्व को निभा नहीं सकता और न ही किसी का सहायक हो सकता है। *-स्वामी महाबीर*

परमात्मा का प्रेम-प्यार सांसारिक मोह-प्यार को समाप्त कर देता है। यह रस या प्रेम सन्तों की दया मेहर से और उनकी बताई हुई युक्ति पर चलकर ही प्राप्त होता है।

-संत नामदेव

ज्ञान-सार

अपना बोझ दूसरे पर न लादना और बिना संकोच दान करना बड़े साहस का काम है।

सत्य का स्थान हृदय में है, सुख से नहीं। केवल मुख से निकलने के कारण कोई बात सत्य नहीं बन जाती।

जिसके मन में मालिक का प्रेम उत्पन्न हो गया, उसे संसार का कोई सुख अच्छा नहीं लगता।

मरते समय मन में जैसा भाव होता है, अगला जन्म वैसा ही मिलता है। इसलिये जीवन भर मालिक के स्मरण की आवश्यकता है, जिससे मृत्यु के समय केवल मालिक ही याद आए।

जिसके हृदय में मालिक प्रेम रहता है, उसके काम, क्रोध, अहंकार आदि सब नष्ट हो जाते हैं।

सत्संग भावांश हिसार 5-4-2005

सौदा कर चल रे भाई, यहां तो राम नाम तत्सार।

हम सभी सांसा रूपी पूंजी लेकर संसार में सौदा करने के लिए आए हैं। यदि हम इस पूंजी को सत्य का सौदा करने में लगा देंगे तो हम संसार के जन्म-मरण सहित असंख्य दुखों से अपने आप को बचा कर अपना कल्याण करके चले जाएंगे। यदि अपनी मान बड़ाई अथवा संसारी सौदों में इसे लगा देंगे तो अन्त समय में रोने-धोने और पछताने के सिवाय कुछ भी हमारे हाथ नहीं लगेगा।

एक भाई ने अभी एक कागज लिख कर भेजा। उसने इस पर लिखा कि अब मेरे पास 'अ' नहीं है, आप 'क' मुझे दे दो। मैंने कागज पर ही लिख दिया कि 'क' तो मैं दे दूंगा, तुम 'प' ले आओ। उसके पास कागज पहुंचते ही मेरे पास आया और उसने कहा-मेरा मतलब तो यह था कि अब मैंने 'अ' यानि अहंकार त्याग दिया है अब आप मुझ पर 'क' यानि कृपा कर दो। मैंने कहा मैंने भी गलत नहीं लिखा है। मैंने यही लिखा है कि तुम्हारे पास में 'प' यानि पात्र नहीं है इसलिए 'क' यानि कृपा नहीं मिलेगी।

पिया को पाती लिखूं, जो कहीं हो परदेश।
तन में, मन में, सांस में, ता को क्या सन्देश।।

पत्र तो उसी को लिखा जाता है जो कोई परदेश में रहता हो। परन्तु वह मालिक तो तन, मन और सांस-2 में है उसको सन्देश देने की आवश्यकता नहीं है। पात्र बन जाओ। परन्तु इतना होने पर भी वह भाई चुप नहीं रहा। उसने आगे कहा-मान लो मैं पात्र हूं तो आप मुझे 'क' यानि कृपा दे दोगे, फिर आपके पास दूसरों को देने के लिए

क्या बचेगा? मैंने उसको समझाया कि जो पूर्ण होता है वह एक पात्र को पूर्ण मिल जाने के बाद भी अपने स्थान पर वह पूर्ण ही रहता है। यदि फिर दूसरा पात्र आता है तो उसको भी वह पूर्ण ही मिल जाता है। फिर भी उस पूर्ण में कोई कमी नहीं होती है। पूर्ण तो अपने स्थान पर हमेशा पूर्ण ही रहता है।

सन्त पात्र बनाने के लिए वचनों के घड़-2 करके बाण मारते हैं। परन्तु जीव उन बाणों को ओटने के स्थान पर उनसे बचने की कोशिश करता रहता है। किसी बाण के बाईं ओर से किसी के दाईं ओर से किसी के ऊपर और किसी के नीचे होकर वह उनसे बचता ही रहता है। वह समझता है कि मालिक ने ये बाण तुझे बीन्धने के लिए नहीं छोड़े हैं, ये तो औरों को बीन्धने के लिए ही छोड़े हैं। यदि कोई जीव मालिक के वचनों के बाणों के आगे अपनी छाती सामने अड़ाकर बिन्धवा ले तो वह पात्र हो जाए, और मालिक उसको अपनी कृपा से मालामाल ही कर दें। परन्तु लोग सच्चाई का सौदा करने नहीं आते हैं वे तो यहां संसारी चीजों का सौदा करते रहते हैं। सन्त तो जीवों की संसारी चाहें भी पूरी करते हैं। इसलिए वे उनको वैसा ही सौदा देकर भेज देते हैं। वे फिर छोटी-मोटी और भी मांग करते हैं तो सन्त सब्जी विक्रेता की तरह से हरी मिर्च और धनिया जैसी चीजें उनकी तरफ फेंक कर कहते हैं कि चल, यह फ्री में और भी ले जा। सच का सौदा करने मालिक के पास कोई बिरला ही पहुंचता है। मालिक उसको भी पहचान लेते हैं, तो कहते हैं कि हां, बैठ भाई, तुझे मैं पूरा तोलकर तेरा सौदा दूंगा। अफसोस की बात है कि ऐसे लोग आते ही नहीं हैं। संसारी चीजों के ग्राहक ही उनके पास आते हैं। फिर बेचारे सन्त सतगुरु का तो कोई दोष नहीं होता है। फिर तो वही बात होती है जैसे अभी एक भाई ने यह वाणी कही थी-

मारी थी लागी नहीं बंकनाल में फूंक।
गुरु बेचारा क्या करे, चेले माहीं चूक।।

सन्तों के दर्शन से आई टलै बला।
जो दण्ड सूली का वो कांटे में टल जा।।

परमसन्त सदा ही रचना के हर कण में मौजूद रहते हैं और अपने शरणागत की काल की शक्तियों से हर क्षण रक्षा करते हैं।

हुजूर महाराज जी हर साल की तरह इस बार भी धुलावारी, नेपाल आए हुए थे। हुजूर महाराज जी के आने से सभी सत्संगी भाई-बहन मिलकर खुशी का आनन्द उठा रहे थे। सुबह से सत्संग, शब्द-बाणी और दिन भर से भण्डारा चल रहा था। अचानक शाम को साढ़े पांच बजे वार शनिवार, तारीख 19.4.2005 को गैस सिलैण्डर में आग लग गई और भाग दौड़ शुरू हो गई। हुजूर महाराज जी उस समय ध्यान में बैठे ही थे। हल्लागुल्ला होने से हुजूर जी उठकर नीचे आये और सभी को बाहर निकल जाने को कहा। उस के बाद हुजूर जी रसोई घर के अन्दर गये और लगभग पांच मिनट के बाद बाहर आये और सभी को आश्रम के अन्दर आकर बैठने को कहा। हुजूर महाराज जी बोले कोई बात नहीं है, जलता है तो जलने दो। लगभग 20 मिनट तक गैस सिलेण्डर में आग लगी रही, लेकिन फटा नहीं। आग अपने आप बन्द हो गई। कुछ देर बाद हुजूर महाराज जी उनके अपने साथ आए सेवादार भाइयों में से दो को लेकर अन्दर गये और गैस सिलैण्डर को बाहर लाकर गिराया। महाराज जी ने सब सत्संगियों को कहा-''आज राधास्वामी दयाल ने हमें बचा लिया''

हुजूर महाराज जी ने दिन के सत्संग के बाद फर्माया था कि ''सिलीगुड़ी से आए सत्संगी सिलीगुड़ी चले जाएं। यहां वाले प्रेम से बनाओ और खाओ, कोई हादशा ना हो जाये। हम तो मोड़े हैं जहां

इच्छा होगी वहीं बनाकर खा लेंगे।'' हुजूर की वाणी को हम संसारी जीव कैसे समझ सकते हैं? इस बात पर हम दुखी भी हैं और खुश भी हैं। दुख इस बात का है कि हमने हुजूर महाराज जी के वचनों का पालन नहीं किया और हुजूर महाराज जी ने खुली छत पर अपना शाम का प्रसाद बनवाना पड़ा और खुशी इस बात की है कि हुजूर महाराज जी के रहते 350-400 सत्संगियों में से किसी को कुछ नहीं हुआ।

हमारे सतगुरु परमदयाल परमसन्त हुजूर कंवर जी महाराज कुल मालिक हैं। वह इंसान के चोले में भगवान हैं। हम सभी धुलावारी के सत्संगी भाई-बहन महाराज जी के आभारी हैं।

संत बोले सहज स्वभाव। सन्त का बोल्या मिथ्या ना जाय।

।। राधास्वामी।।

- सभी सत्संगी भाई बहन,
धुलावारी झापा (नेपाल)

नोट :-जिस किसी सत्संगी भाई के साथ इस प्रकार सतगुरु दया की घटना घटी हो तो प्रमाण सहित दिनोद धाम में भाई बलबीर सिंह को दे सकते हैं।

आगामी मास के सत्संग

21 जुलाई, 2005 गुरुवार (गुरु पुर्णिमा) भिवानी

सूचना

संगत के सूचनार्थ ये प्रेषित किया जा रहा है कि हुजूर महाराज जी 19.5.2005 से 30.6.2005 तक विदेश सत्संग दौरे पर रहेंगे।

कहानी

मनुष्य जन्म

मनुष्य देह बहुत ही दुर्लभ है। यह बड़े पुण्य बल से और खास करके परमात्मा की कृपा से मिलता है और मिलता है केवल परमात्मा प्राप्ति के लिये ही। इस शरीर को पाकर जो मालिक प्राप्ति के लिये साधन करता है, उसी का मनुष्य-जीवन सफल होता है। जो इसमें सुख खोजता है, वह तो असली लाभ से वंचित ही रह जाता है, क्योंकि यह सर्वथा सुख रहित है, इसमें कहीं सुख का लेश भी नहीं है। जिन विषय-भोगों के सम्बन्ध को मनुष्य सुखरूप समझता है, वह बार-बार जन्म-मृत्यु के चक्कर में डालने वाला वस्तुत: दु:खरूप ही है। अतएव इसको सुखरूप न समझकर यह जिस उद्देश्य की सिद्धि के लिये मिला है, उस उद्देश्य को शीघ्र से शीघ्र प्राप्त कर लेना चाहिए। क्योंकि यह शरीर क्षण भंगुर है, पता नहीं किस क्षण इसका नाश हो जाये। इसलिये सावधान हो जाना चाहिये। न इसे सुखरूप समझकर विषयों में फंसना चाहिये और न इसे नित्य समझकर भजन में देर ही करनी चाहिये। कदाचित् अपनी असावधानी में यह व्यर्थ ही नष्ट हो गया तो फिर सिवाय पछताने के और कुछ भी उपाय हाथ में नहीं आयेगा।

यदि इस मनुष्य जन्म में परमात्मा को जान लिया तब तो ठीक है और यदि उसे इस जन्म में नहीं जाना तब तो बड़ी भारी हानि है। मुक्ति का रास्ता केवल मनुष्य जन्म से है और भावना से मनुष्य जन्म की इच्छा करना सबसे बड़ा पुण्य है। ●

कहानी

दुर्भाषी से बचो

संसार में दुर्भाषी मनुष्य बड़ा भारी शत्रु है। इसका कर्म, धर्म सब व्यर्थ है क्योंकि वह क्षण-2 अपनी जिव्हा से पाप की कमाई करता रहता है। ऐसा व्यक्ति धर्मावलम्बी और सत पथ गामी नहीं हो सकता है, क्योंकि दुर्भाषण से प्रतिदिन मलीन बनता रहता है। जो बात वह मुंह से निकालता है वही उसको बुरा बनाती जाती है। वह भक्ति भाव क्या खाक करेगा। चाहे गृहस्थी हो या विरक्ती सबके लिये दुर्भाषण अपवित्र आदत है। तुम लोग इस आग से बचो, वरना यह सबको जलाकर भस्म कर देगी। इससे अलग रहने में ही भलाई है।

जो आदमी क्रोध से बचता है वही साधु और सच्चा साधु है। जो सभ्यता, मन की सम्भाल और सदाचार के साधन में लगे रहते हैं वही लोग साधु कहलाते हैं। यदि कोई बुरा भी कहे तो तुम उसको सहन कर लिया करो और बदले में तुम मधुर भाषण से काम लो ताकि वह तुम्हारा लोहा मान ले।

क्रोध अग्नि घर घर बढ़ी, जले सकल संसार।
दीन लीन जन भगति में, तिन के निकट उबार।।
जगत मांहि धोका घना, अहम क्रोध और काल।
पार पहुंचा कर मार दे, ऐसा जम का जाल।।

●